भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 09 | अंक 22 | उदयपुर रविवार 01 दिसंबर 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

सांचौर मंडल का मूलराज अभिलेख

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'-

सांचौर को सत्यपुर कहा गया है। उसका ऐतिहासिक महत्व रहा है। सत्यपुर कल्प मिलता है। वहां से चालुक्यराज मूलराज का अभिलेख मिला है। इस अभिलेख में मूलराज का समय संवत् 1051 लिखा है। यह ताम्रपत्र उस संवत् की माघ सुदी पूर्णिमा को जारी किया गया। तब तारीख – 19 जनवरी, 995 थी।

इसमें अन्हिलवाड़ पट्टन का नाम है और 'राजावली' शब्द देकर पूर्ववर्ती राजाओं के नाम नहीं दिए गए हैं। इससे केवल 72 वर्ष पूर्व का, 923 ई. का वनराज चावड़ा का जो ताम्रपत्र मिला है, वह अन्हिलवाड़ से जारी है और वहां की राजावली के रूप में परमर्दिदेव, मदनपाल आदि के नाम दे रहा है जिनको कान्यकुब्ज की सूची से मिलाया जा सकता है और यह नवज्ञात ताम्रपत्र यह भी बताता है कि तब यह क्षेत्र लाट देश में पाटन का मान रखता था। इस अन्हिलवाड़ को वनराज ने अपनी भुजा के बल पर हथियाया था तभी उसने ताल ठोक कर कहा।

उसके बाद, पाटन और लाट पर प्रभुत्व का जो संघर्ष हुआ होगा, उसमें सोलंकियों (चालुक्यों) का पलड़ा भारी रहा। मूलराज का प्रस्तुत 995 ई. का ताम्रपत्र बता रहा है कि कान्यकुब्ज से ही निकले हुए अशेष विद्या पारंगत और तपोनिधि दुर्लभ आचार्य के पुत्र दीर्घाचार्य ने संभवत: उस संघर्ष में मूलराज के पक्ष में बड़ी भूमिका निभाई हो। कहना न होगा कि कोई भविष्यवाणी की हो अथवा अपने पक्षवर्ती जनों को मूलराज के समर्थन में खड़े की प्रेरणा दी हो, जैसा कि तब की राजनीति में बहुत सामान्य बात थी, ऐसे में दीर्घाचार्य को शासन के रूप में वरणक नामक गांव दिया जो सांचौर मंडल में था और जिसके चारों और निम्न गांव थे –

1. पूर्व दिशा में धणार ग्राम,
2. पश्चिम दिशा में बोढ़ ग्राम,
3. उत्तर मैत्रवाला और
4. दक्षिण दिशा में गुंदाउक।

कहना न होगा कि इस समय सत्यौर या सत्यपुर के रूप में सांचौर ख्याति में आया तो धारा नगरी तक भी उसकी चर्चा थी और प्रबन्ध काव्यों में उसकी कथाएं लिखी गईं। सत्यपुर कल्प को लिखना बड़े गौरव की बात थी जिसे परवर्ती पुराण वालों ने नकार भी दिया।

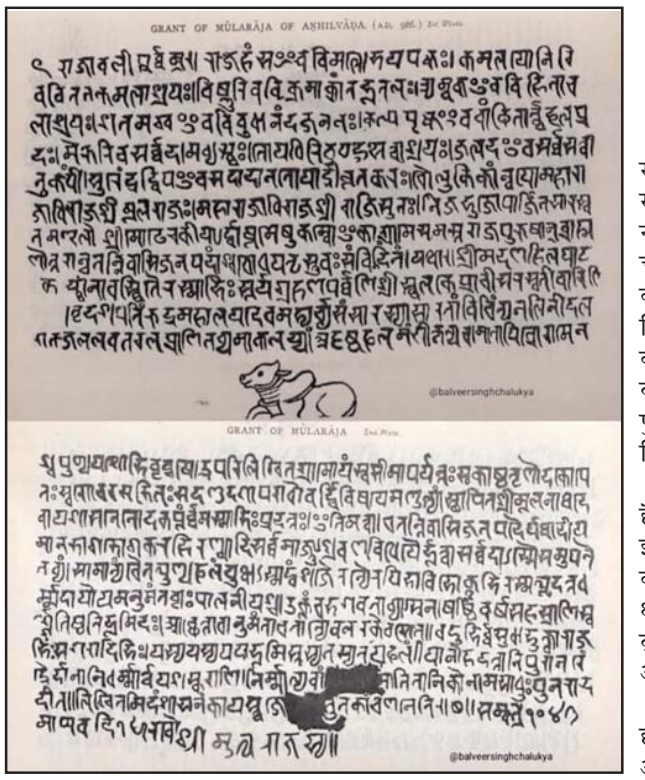

यह भी उल्लेखनीय है कि मूलराज ने अपने इस शासनिक ग्राम दान की आज्ञा से वहां के सभी क्षेत्रीय और राजकीय लोगों, अधिकारियों, ब्राह्मणेतर और जनपद के निवासियों को अवगत कराया।

– इस ग्रामदान के रूप में उस सीमा में होने वाले आर्थिक लाभ, वृक्ष आदि से प्राप्त अर्थ, लकड़ी, घास – पूस आदि का अधिकार दिया गया।

– वहां के घाघली नामक कूप विभाग के जल के वितरण आदि का अधिकार भी दिया गया।

– वहां पर होने वाले दस तरह के अपराधों पर नियंत्रण रखने और अपराधियों को सजा देने का अधिकार भी दान प्राप्त करने वाले को दिया गया।

इस ताम्रपत्र में भगवान वेदव्यास के दो वचन, जो महाभारत आदि में आए हैं, प्रतिज्ञा श्लोक के रूप में लिखे गए हैं और कहा गया है कि जो इस आज्ञा का उल्लंघन करेगा, वह नरक गमन करेगा। कायस्थ कंचन ने इसको लिखा था और मूलराज के दूत महता शिवराज इसके लिए अनुमति दी थी।

उल्लेखनीय है कि इससे वनराज चावड़ा का भी काल समझ सकने में मदद मिलेगी। वनराज का जो ताम्रपत्र मिला कुछ समय पूर्व, उसके साल संवत से उसकी पीढ़ियां ज्ञात हों जाएगी। उनका राज्यकाल से मूलराज का राज्य स्थापना वर्ष ज्ञात किया तो जा सकता है।

बिरहोर, असुर और बेरहासुर

-डॉ. शोभा सिंह-

झारखण्ड के लातेहार और गुमला जिले में एक आदिम जनजाति पाई जाती है असुर। जनजातियों में आदिम जनजाति वह होती है जो आज भी अत्यंत पिछड़ी है। झारखण्ड में असुर जनजाति के अलावा और 8 आदिम जनजातियाँ पाई जाती हैं हालांकि झारखण्ड में कुल 32 जनजातियाँ अस्तित्व में हैं। आदिम जनजातियां आज विलुप्ति के कगार पर हैं।

बोकारो में जहाँ राज. के. मिश्रा का पदस्थापन है वहां भी एक आदिम जनजाति पाई जाती है– 'बिरहोर'। ये आज भी पत्तों से बने घरों में रहते हैं। झारखण्ड में आदिवासियों का वर्गीकरण निम्न वर्गों में राँची विश्विद्यालय के नृवैज्ञानिक 'विद्यार्थी' ने किया है–

1. हंटर–गेदरर– बिरहोर, कोरवा आदि
2. शिफ्टिंग एग्रीकल्चर– सौर पहाड़िया आदि
3. सिंपल आर्टिसन– करमाली, महली आदि
4. सेटल्ड अग्रिकलचरीस्ट– सन्थाल, ओरांव, मुंडा आदि

भाषाई वर्गीकरण के आधार पर झारखण्ड की जनजातियाँ दो वर्गों में विभाजित हैं–

1. द्रविड़ियन– ओरांव, माल्टो आदि
2. ऑस्ट्रोएशिएटिक– यथा सन्थाल, मुंडा, हो आदि।

असुर ऑस्ट्रोएशिएटिक भाषा बोलने वाले लोग हैं। पूछने पर कि क्या यह वही असुर हैं जिनका वर्णन हिन्दू धर्मशास्त्रों एवं आख्यानों में मिलता है? अधीत विद्वान भाई सीधा और सपाट उत्तर है कि नहीं। इन्हें एक विचारधारा विशेष के तहत हिन्दू आख्यानों में वर्णित असुरो के साथ सम्बध कर दिया गया है। कभी इनके उपनाम 'असुर' का प्रयोग मिशनरी लेखको द्वारा अपने फायदे के लिए किया गया है, तो हाल में ही इनके इस उपनाम का उपयोग 'महिषासुर विवाद' को जन्म देने के लिए किया गया।

इसके लिए देवी द्वारा महिषासुर वध के पौराणिक आख्यान के समानांतर पुराणों के पुनर्पाठ के नाम पर एक नया मिथ गढ़ने का प्रयास किया गया जिसमें महिषासुर एक न्यायप्रिय राजा बनता है और उक्त पौराणिक आख्यान को आर्य अनार्य की थ्योरी के अनुरूप आर्यो द्वारा अनार्यो के ऊपर अत्याचार की एक कड़ी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

बहरहाल, असुर लोहा गलाने वाली जनजाति है। मानवता को लोहा गलाने की तकनीक सिखाने वाली विश्व के सबसे प्राचीन तकनीशियनों में यह अफ्रीका की कुछ जनजातियों की तरह यह सबसे प्राचीन तकनीशियन हैं। इनका जीवन भट्ठी के इर्द–गिर्द ही घूमता है। इनके कथा कहानियों में भट्ठी, इनके गीतों में भट्ठी। यही नही सन्थाल जो इनकी भांति ही प्रोट्रो ऑस्ट्रेलॉयड हैं बोंगा को कुछ चढ़ाते समय जो कथा कहते हैं उसके अनुसार असरों ने अपनी भट्ठी में सुप्रीम बोंगा को जलाने का षडयंत्र किया था। यह शायद इनके आपसी तनाव की अभिव्यक्ति है क्योंकि असुरो के विपरीत सन्थाल कृषि करने लगे।

संथाली और आसुरी भाषा में एक शब्द है – बेरहासुर जिसका अर्थ होता है सूर्यास्त होना। बेरहा–बेड़ा।

ज्यों भोजपुरी में भी कहते हैं 'बेरा डूब गइल'।

असुर अपनी भट्ठी रात में ही जलाते है क्योंकि रात में ही लोहा और इसके कचरे को अलग अलग पहचाना जा सकता है। सूर्य की रोशनी में यह विभेद नही किया जा सकता।

अत: यह रात में काम करने वाले लोग हैं। जब बेरहासुर हो जाए अत: हासुर या असुर।

यह व्याख्या सन्थाल आदिवासियों की सिंगा बोंगा अर्थात सूर्य का असुरो द्वारा अपनी भट्ठी में जलाने के प्रयास की कथा की भी व्याख्या कर देता है।ये खनिजों, धातुओं की पारख परख के गुणधारक होते हैं।

प्रलय

सृजन निर्माण की ये सृष्टि
उजड़ बिखर कर बनती रही नयी
होती रही इंसानी फितरत की शिकार

मर्यादाओं का हुआ जब-जब हनन
तब-तब हुआ विनाश और विध्वंस
स्वीकारी बदलाव की नयी चुनौतियां

वर्तमान में लगायी दुस्साहस भरी छलांग
जिंदा पीढ़ियों में भूत भविष्य का अंतराल
तकनीक व जीवन मूल्यों में गहरा भेद

शुरू हो चुका संबंधों व संस्कारों में पतन
बनावटी बौद्धिकता /AI का है नया दौर
असल ने शुरू किया नकली बेकाबू दौर

भस्मासुरी इंजन का किया है ईजाद
अपार क्षमता जिसमें सूचना स्मरण की
अस्तित्व आदमी का मिटा रही ये इंजन

बेबस लाचार हो रहा है आदमी
अपनी ही सृजन निर्मिति के
चक्रव्यूह में फंस रहा है आदमी

मौत के नये औजार है हाथ में
हत्या अब सिर्फ हथियारों से नहीं
की जा रही है बना के लाचार

हर हाथ लिए घूम रहा है
अकेलेपन का साजिशी फन
अपनी जासूसी का सामान
घर ही नहीं दिमाग में घूस गया है
ये चालाक लुभावना सुविधा यंत्र
ज्ञान पिटारी से कर रहा निक्कमा

सहजता की आड़ में हो रहा मजबूत
रौंद रहा है परंपरा व संस्कृतियों को
खा गया निजता संवदेना इंसान की

डिब्बे पटरी से उतार रहा है सर्च इंजन
यात्रियों से ही खेल रहा है AI इंजन
निगल रहा बच्चों की उम्र, मासूमियत

अबूझ बेचारगी से घिर रहा है इंसान
दल-दल की तरह बन रही है ये बेचारगी
एक बार धसा तो धसता ही जा रहा है

माना कि जरूरी है विज्ञान और विकास
पर इंसान भी बना रहे स्वच्छंद आनंदित
तय हो नव ईजाद की हदें और क्षमताएं
वरना निश्चित ही है कल का प्रलय

- रमेश बोराणा

प्रसिद्ध लेखक डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' सेवानिवृत्त

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान के उच्च माध्यमिक शिक्षा विभाग में 28 वर्ष की सेवा के बाद प्रसिद्ध लेखक डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' 31 अक्टूबर को निवृत्त हो गए। एक शिक्षक के रूप में उन्होंने जनवरी, 1996 में उच्च प्राथमिक विद्यालय, ढोल गांव से अपनी सेवाएं शुरू की और फिर गोगुंदा सहित गिर्वा

और सलूंबर तहसीलों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में सामान्य विषय अध्यापक के रूप में तैनात रहे। हर विषय को पढ़ाने के कारण ही उन्होंने विभागीय पाठ्य सामग्री सहित भारतीय ज्ञान परंपरा पर ध्यान दिया और श्रेष्ठ परिणाम और विभागीय समितियों सहित पाठ्य पुस्तकों के लेखन तथा विद्यालयों के भौतिक विकास के अपूर्व योगदान के कारण 2013 में राजस्थान के राज्यपाल ने श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में सम्मानित किया। इसके अगले ही वर्ष, 2014 में उन्हें राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान प्रदान किया।

चित्तौड़गढ़ जिले के आकोला गांव के मूल निवासी डॉ. जुगनू ने 1989 में राजस्थान पत्रिका में उप संपादक के रूप में अपना कैरियर शुरू किया था। उनकी पूरी शिक्षा स्वयंपाठी रूप में हुई। वे राजस्थानी और हिन्दी ही नहीं, संस्कृत, अंग्रेजी, गुजराती, बंगाली, मराठी साहित्य के अध्येता रहे। उन्होंने 1992 ई. में लोक मनीषी डॉ. महेंद्र भानावत के सुझाव और डॉ. नरेंद्र भानावत के निर्देशन में 'मेवाड़ में हीड़ गाथा गायन' विषय पर पी.एचडी. की।

सेवारत रहते ही उन्होंने देश-विदेश के ग्रंथ भंडारों में संग्रहित संस्कृत ग्रंथों की पांडुलिपियों के उद्धार का जो काम किया, वह इस सदी का सबसे बड़ा कार्य है। संस्कृत के कोई सौ ग्रंथ, पुराण, उपपुराण, उपवेद, शास्त्र सहित लोक भाषाओं के ग्रंथ संपादित कर भारतीय ज्ञान की धाराओं को खोल दिया। इसी योगदान पर हिंदुस्तानी अकादमी, प्रयागराज ने उन्हें पांच लाख रुपयों का गुरु गोरक्षनाथ सम्मान प्रदान किया। ढाई सौ पुस्तकें उनके श्रम की साक्षी है।

वे शब्द रंजन परिवार के सदस्य ही नहीं, नियमित लेखक और सर्वदा शुभ चिन्तक हैं। जुगनूजी को शब्द रंजन की ओर से अनेक बधाई और भावी जीवन की शुभ कामनाएं।

शुभ विवाह

द कमल शर्मा आर्ट गैलेरी के कमल-चित्रल शर्मा की पुत्री कृति का शुभ विवाह राजेश-अनिता शर्मा के सुपुत्र दक्ष के साथ 26 नवंबर 2024 को पारस हिल रिसोर्ट, क्लब महिन्द्रा, बलीचा, उदयपुर में सम्पन्न हुआ।

गणपतसिंह-पुष्पादेवी हिंगड़ के दोहिते, मुकेश-शुभा हिंगड़ के भानजे व मनोज राजश्री सुराणा के सुपुत्र दिव्यांक का शुभ विवाह 02 दिसंबर 2024 को महेश-इंदु कुमावत की सुपुत्री शिवांगी के साथ एमडी वेली रिसोर्ट एंड स्पा, उदयपुर में सम्पन्न हुआ। शब्द रंजन परिवार की बधाई।

प्रेम प्रकाश की पुंज

-डॉ. रमेश 'मयंक'-

औरत
प्रेम जल से लबालब
झील सी होती,
शान्त- स्थिर
गूढ़ गहनतम भावों को
अपने भीतर रखती
समाहित।
औरत-
अश्रु-जल से
करुणा-वात्सलय
श्रद्धा सहजता, और
संवेदन शीलता के
सागर की लहरों सी
बन जाती,
अपनी निराशा, घुटन, कुंठा,
पीड़ाओं को छुपाती,
गुनगुनी धूप सा
सुखद अहसास जगाकर
अदम्य साहस-त्याग
समर्पण का पर्याय भी
कहलाती।
औरत प्रेम पाने
शीतल रहती,
आग्न पुंज का ताप सहती,
ज्योतिपुंज है,
प्रेम प्रकाश की कुंज है।
औरत को
सत्ता अस्तित्व की
सीमाओं में मत बांधो,
घर-परिवार
समाज राष्ट्र के
निर्माण-उत्थान
उत्कर्ष के सोपान पाने
हृदय मस्तिष्क में
समुचित देना होगा स्थान
तभी सार्थक होगा
जीवन की सफलता का
अभियान।

सर्दी की कांप

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

दिन ठंडे बस्ते का
श्वेत पत्र सुस्ताते-सुस्ताते
सरक जाता है डूंटी-गोले सा ।
हवाएँ भरी सभा मै
द्रोपदी का चीर सर्राटा देती
धूजणी छोड़ जाती है
सब के डीलो में।
सांझ मफलर सी फिर-फिर
गले लिपटती है।
सूरज रज विहीन
अस्त हो जाता है रात्रि को
सीता सी छोड़।
नदियो मे जमने वाला पानी
आँखो मे धुंध बन
नाको मे बहने लगता है
सरड़-सरड़
जंगल समंदर पहाड़ सबके सब
टिकुरते-टिकुरते निःशब्द हो जाते है।
आकाश को अस्थमा ने
जब दबोचा है उसने
पूरी धरती को ही
ओढ़ लिया है।
शेर के मुँह को खोखल मान
गोरैया जा दुबकी है गरमास पाने।
शोक सभा और श्रद्धांजलियां
सब हो गये है काम चलाऊ।
विज्ञापनो मे मुस्करा रहे है
मरणधर्मा समधी और स्नेहीजन
शवयात्राओ से अधिक
खबरो मे नजर आते है।
बूढ़े लोग उठने के डर से
बैठे-बैठे खिसक रहे है।
राज पथ पर झुर्रियां गवाक्ष मे
झाकंता कोई औधे मुंह
अकड़ गया है।
मदिरो मे भगवान
ऊनी वस्त्रो मे सते-बजे
भाग्यवान बन इठला रह है।
अन्तरिक्ष मे कल्पना की उड़ान तक
उतर आई है।
तुम प्रयोग तो कर रहे हो
मगर देखलो काल
बेमौसम हो गया है।
अकाल की परखलनी मे
शीत-कंपा शिशु क्या गुल खिलायेगा?

आग

थी तो वह मामूली चिंगारी ही। चिंगारी फेंकने वाला भी दूर का नहीं, पास के ही मोहल्ले का था पर लोगों का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। एक विधर्मी की यह मजाल कि वह हमारे मोहल्ले में आकर चिंगारी छोड़ जाए!

चिंगारी आग बनने लगी। बजाय इस आग को बुझाने के, लोगों की भीड़ हथियारों से लेस होकर चिंगारी फेंकने वाले की तलाश में पड़ोसी मोहल्ले की और बढ़ी। हवा पाकर आग फैलने लगी। इस बात से बेखबर कि एक मोहल्ले की आग पूरे शहर को ख़ाक कर सकती है, आगे एक जवाबी मोर्चा तैयार था।

चिंगारी भड़काने वाला गायब था। उसे तलाशने और उसे बचाने वाले आपस में भिड़े हुए थे। आग को खुली छूट थी अपना खेल खेलने की। उसकी लपटों ने किसी को नहीं बख्शा। कुछ दिनों बाद जब आग अपने-आप बुझी तो दोनों ओर के लोगों को एक बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ। आग का असर दोनों गुटों के लोगों पर एक जैसा था। वही; चमड़ी का झुलसना, फफोले उग आना, जगह-जगह मांस लटक जाना। लोग पूछने लगे कि जब आग का असर तमाम जिस्मों पर एक जैसा होता है तो फर्क कहाँ है? हमने आग बुझाने की बजाय हवा क्यों दी? क्यों दी?

-माधव नागदा

कैपेसिटी बिल्डिंग पर कार्यशाला आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। स्थायित्व प्राप्त करने के लिए समय के साथ सकारात्मक बदलाव लाना आवश्यक है। ये विचार राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. कर्नल एस. एस. सारंगदेवोत ने जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के जन शिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रम निदेशालय और दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक बोर्ड के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम कार्यशाला में व्यक्त किये। प्रो. सारंगदेवोत ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की भूमिका पर चर्चा करते हुए कहा कि इसके सही उपयोग के लिए आम जनता के भ्रम को दूर करना जरूरी है। एआई के कारण रोजगार छिनने का डर केवल एक भ्रांति है और इसे समझने के लिए एक संतुलित और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

कार्यशाला को दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड के क्षेत्रीय प्रबंधक जगदीप सिंह, कुलप्रमुख भंवरलाल गुर्जर, पीठ स्थविर डॉ. कौशल नागदा ने भी संबोधित किया। जनशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रम निदेशक बाल कृष्ण शुक्ला ने अतिथियों का स्वागत किया। जन शिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रम निदेशालय के निदेशक प्रो. राजीव शुक्ला ने विषय प्रवर्तन प्रस्तुत किया। सहायक कुलसचिव धर्मेंद्र राजोरा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन प्रो. संजीव राजपुरोहित ने किया।

कार्यशाला में राकेश दाधीच, डॉ. विजय दलाल, तृप्ता जैन, डॉ. सोनू बडाला, डॉ. यज्ञ आमेटा, के के कुमावत, पीरुकांत मीणा, मरजीना बानू, बद्री मीणा, स्नेहलता शर्मा, विजय गर्ग, नरेंद्र सेन, यशोदा आमेटा, लोगरलाल गायरी, मनोहरसिंह चूंडावत उपस्थित थे।

'संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन, हरित दृष्टिकोण तथा उदयपुर के लिए सीख' पर वार्ता आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स, इंडिया, उदयपुर लोकल सेंटर द्वारा 'संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन, हरित दृष्टिकोण तथा उदयपुर के लिए सीख' पर वार्ता का आयोजन किया गया। प्रारम्भ में दि इंस्टिट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स इंडिया उदयपुर लोकल सेंटर के अध्यक्ष इंजी. पुरुषोत्तम पालीवाल ने जलवायु शिखर सम्मेलन कोप 29 से भाग लेकर लौटे, पर्यावरण संरक्षण

गतिविधि से जुड़े, विद्या भवन पॉलिटेक्निक के प्राचार्य डॉ. अनिल मेहता तथा डॉ. गिरिराज न्याती, निदेशक, टेक्नो इंडिया एनजेआर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी का स्वागत किया। पालीवाल ने कहा कि आवास और शहरी विकास पहल टिकाऊ शहरी नियोजन और जलवायु-लचीले बुनियादी ढांचे पर केंद्रित है। ऐतिहासिक शहर उदयपुर कोप 29 परिणामों और हरित परिप्रेक्ष्यों से सीख सकता है। मानद सचिव इंजी. पीयूष जावेरिया ने उदयपुर शहर में हो रहे जलवायु परिवर्तन यथा जैव विवधता, पानी की कमी, कृषि संबंधी प्रभाव, पर्यटन निर्भरता आदि में आ रही चुनौतियों पर विचार व्यक्त किये।

डॉ. अनिल मेहता ने अजरबैजान में विगत दिनों संपन्न हुए संयुक्त राष्ट्र संघ जलवायु शिखर सम्मेलन, कोप 29 के संदर्भ में अपने विचार रखे। मेहता ने कहा कि उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों सहित विश्वभर से आए प्रतिभागियों से वैदिक शांति पाठ को यू एन क्लाईमेट पीस प्रेयर के रूप में स्वीकार करने का आग्रह किया। डॉ. गिरिराज न्याती ने बताया कि जो सुविधा आपको कार में चाहिए मोटर कंपनी तदनुसार वह सुविधा मुहैया करने में सक्षम होगी और कार की सर्विस मॉडल में बदलाव आएगा जिससे माइलेज या समय सीमा के बाद कार मे ऑयल चेन्ज करने को याद रखने की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि कार में ऐसे फीचर्स आएंगे जिससे वह अपने आप संकेत देगी की ऑयल चेंज करना है और उद्योग 4.0 डिजिटल प्रौद्योगिकी में कई प्रमुख नवाचारों के संयोजन को संदर्भित करता है। संचालन इंजी. पीयूष जावेरिया ने किया।

स्मृतियों के शिखर (194) : डॉ. महेन्द्र भानावत

तोरण : म्हारो बनो नखराळो रे हाथी रे होदे तोरण वांदसी

विवाह-शादियों में तोरण का अर्थ 'द्वार' विशेष से न लेकर काठ की बनी 'टिकटी' विशेष से लिया जाता है जिसके ऊपर ही ऊपर बगल में चिड़कलियां बनी हुई होती हैं। ये चिड़ियाएं एकी की संख्या में 2, 5, 7,9, तथा 11 तक होती हैं। तोरण खाती द्वारा बनवाया जाता है जिसे या तो गेरू अथवा हल्दी से रंग दिया जाता है या फिर लाल, पीले, हरे आदि रंगों से रंग दिया जाता है। कहीं-कहीं आसापाले के पत्तों का तोरण भी बनाया जाता है।

राजस्थान में प्राय: हर जाति में तोरण वांदने की प्रथा हैं। दूल्हा जब शादी करने के लिए वधू के घर पहुंचता है तब मुख्य द्वार पर तोरण पश्चात ही अन्दर प्रवेश पाता है। यह तोरण अक्सर तलवार से चटकाया जाता है। कहीं-कहीं छड़ी तथा खांडे से चटकाने की प्रथा भी है। हाथ में रखी तलवार से तोरण के ऊपर-ही-ऊपर लगे मयूर को छुवाता है। तोरण चटक जाने पर प्राय: आधी शादी पूरी हुई समझ ली जाती है। तोरण चटकाने के बाद उसे मुख्य द्वार पर बांध दिया जाता है। इसीलिए मुख्य द्वार को 'तोरण द्वार' भी कहा जाता है । जीवन में जिस व्यक्ति के घर कभी तोरण नहीं चटकाया गया, वह व्यक्ति अभागा ही समझा जाता है। इसलिए पुत्र जन्म के साथ-साथ पुत्री जन्म भी शुभ एवं मंगलकारी माना गया है। तोरण जब सड़ जाता है या बहुत पुराना पड़ जाता है तो उसे बरसात के पानी में सिरा दिया जाता है। कहीं-कहीं तो यह तोरण तब तक लगा ही रहता है, जब तक कि उसका स्थान कोई दूसरा तोरण न ले ले।

विविध प्रकार के तोरण :

तोरण प्राय: घोड़ी पर बैठकर चटकाया जाता है। सम्पन्न घरों में हाथी पर तोरण वांदने की परम्परा रही है। लोकगीतों में भी हमें इस बात की पुष्टि मिलती है- 'म्हारो बनो नखराळो रे, हाथी रे होदे तोरण वांदसी।' प्राचीन समय में बैल तथा ऊंट पर से भी तोरण चटकाने की प्रथा रही है। वर्तमान में इन तोरणों के कई आकार एवं प्रकार देखने को मिलते हैं। कहीं-कहीं तो अपनी-अपनी जाति का एक पंचायती तोरण रहता है जो आवश्यकतानुसार चटकाने के लिए ले जाया जाता है। तोरण ले जाने वाला अपनी-अपनी स्थिति के अनुसार पंचायती- कोथली में 5, 7, 9, 16 से लेकर 51 रुपये तक जमा कराता है। उदयपुर जिले के निकुम गांव में इस प्रकार के पंचायती तोरण की व्यवस्था है।

तोरण-मोबण :

आबू-केसरगंज की ओर सुथारों में तोरण की बजाय मोबण का प्रचलन है जिसे माणकथंभ भी कहा जा सकता है। यह एक प्रकार से तोरण-माणकथंभ दोनों का मिश्रित प्रकार है। माणकथंभ की ही तरह ये मुख्यद्वार के बाहर गड़े रहते हैं। इनकी ऊंचाई 5-7 फीट तक की होती है। पिंडवाड़ा में जवानाजी सुथार (20 मार्च, 1979) को घर के बाहर तथा उन्हीं के पास के दो मंदिरों के यह मोबण देखने को मिला। यह सालर या इमली की लकड़ी का बड़ा सुन्दर कलात्मक होता है जिसे बड़ी कारीगरी के साथ बनाया जाता है। इसे बनाने में बड़ी मेहनत लगती है इसीलिये इसका आम प्रचलन नहीं है।

जवानाजी ने बताया कि लड़की की शादी पर कुछ समधी सुथार मिलकर इसे बनाते हैं। यह पांच रंगों (गुलाबी, नीला, पीला, हरा, लाल) में बना होता है। यह बनावट में माणकथंभ की ही तरह होता है। ऊपर लकड़ी का ही कलश बनाया जाता है और ऊपर ही ऊपर मोर बनाया जाता है। आस-पास चिड़ियां बनाई जाती हैं। दूल्हा इसी को चटकाकर विवाह के लिये भीतर प्रवेश करता है। मंदिरों में मूर्ति प्रतिष्ठा समारोह पर भी यह मोबण स्थापित किया जाता है।

युद्ध-स्थल का प्रतीक-तोरण :

तोरण युद्ध-स्थल का प्रतीक माना जाता है। प्राचीन काल में राजा-महाराजा अपने सैन्यबल के साथ एक दूसरे पर आक्रमण कर अपने राज्य की सीमा का विस्तार करते थे। साथ ही उनकी बहिन-बेटियों तक का अपहरण भी करते थे। ऐसा कहा जाता है कि कालान्तर में वही प्रथा तोरण के रूप में प्रचलित हो गई। किसी दुर्ग के मुख्य द्वार से ही शाही विजय प्राप्त कर अन्दर प्रवेश होता था। इसी प्रकार दूल्हा भी मुख्य द्वार पर तोरण चटकाकर ही अन्दर प्रवेश पाता है और चंवरी में उसका ब्याह रचाया जाता है। कभी-कभी एक ही लड़की से विवाह करने के लिए दो-दो, तीन-तीन वर तैयार हो जाते थे। अन्त में निर्णय यही रहता कि जो शक्तिशाली हो वही विवाह करने का अधिकारी हो। परीक्षा हेतु प्रतीक रूप में तोरण खड़ा कर दिया जाता जिससे कितनी ही बातों की एक साथ परीक्षा हो जाती थी। जैसे वह निशान ठीक साधना जानता है कि नहीं। उसे तलवार पकड़ना भली प्रकार आता है या नहीं। घोड़ी अथवा हाथी जिस पर वह सवार है, पर ठीक प्रकार से सवारी कर सकता है या नहीं तथा वह हर प्रकार से सतर्क एवं सावधान है या नहीं।

तोरण आये वर की परीक्षा :

इसी दौरान वधू पक्ष की ओर से औरतें आकर तोरण चटकाते वक्त वर की परीक्षा लेती हैं। इसमें दूल्हे के पहनी अंगरखी की बंधी कस खोलना, उसकी आंखों में काजल आंजना तथा उसके सिर घाघरा डालना मुख्य है। वर की परीक्षा लेने के आज भी ऐसे कई रूप देखने को मिलते हैं जिनमें वर को पग-पग पर अत्यन्त सावधानी बरतते हुए इस परीक्षा-काल में गुजरना पड़ता है। ये सारी परीक्षाएं वे ही औरतें लेती हैं जो इस काम में अत्यन्त पटु समझी जाती हैं। जिस घर में श्वसुर तोरण मार लेता है उस घर में उसका जमाई तोरण नहीं मार सकता अर्थात श्वसुर ने जिस घर में शादी की हो उसी घर में उसका जमाई शादी नहीं कर सकता।

डॉ. मनोहर शर्मा ने तोरण के सम्बन्ध में एक स्थान पर लिखा है कि तोरण मुख्य-द्वार का नाम है परन्तु राजस्थान में खाती के द्वारा अलंकरण के रूप में एक छोटा सा 'तोरण' विवाह के लिए बनवाया जाता है। उसके ऊपर काठ की बनी हुई सात चिड़ियाँ बिठाई जाती हैं और मध्य में सुग्गे की आकृति रहती है। कहीं-कहीं सुग्गे के स्थान पर मोर दिखलाया जाता है। इनके अतिरिक्त फूल-पत्तियों का अलंकरण किया जाता है। इस तोरण को दरवाजे के ऊपर लगा दिया जाता है और दूल्हा इसे हरी डाली से छूता है, जिसे 'तोरण मारना' कहा जाता है। असल में यह तोरण अथवा तोरण के देवता की वंदना है।

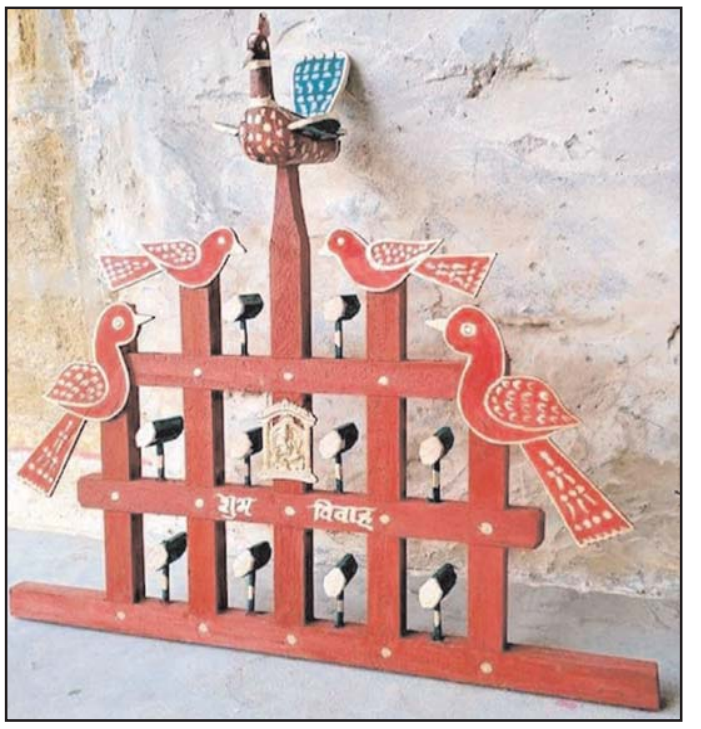

राजस्थान में घर के प्रवेश द्वार की ताक पर गणेश प्रतिमा स्थापित करने की विशेष प्रथा भी हैं। यह घर के आरक्ष देवता की सूचक है। राजस्थान में राजाओं अथवा ठाकुरों के यहां बरात आती थी तो कई बार 'तोरण' को प्रवेश द्वार पर बहुत ऊंचा जानबूझ कर लगा दिया जाता था, जिससे कि वर की शक्ति परीक्षा हो सके। ऐसे अवसर पर वर अपनी घोड़ी को दूर से दौड़ाते हुए तोरण के पास ऊंची छलांग लगवाता था और तोरण को अपनी तलवार से छूता था। यही कारण था कि तोरण-वंदना के स्थान पर जनसाधारण में 'तोरण मारना' प्रयोग प्रचलित हो गया।

कहीं-कहीं प्रवेशद्वार पर एक वृक्षाकृति भी खड़ी की जाती है। उसमें भी कृत्रिम सुग्गा और चिड़िया बिठाई जाती है। इसे 'माणिकथंभ' कहा जाता है। तोरण के पक्षी एवं लता आदि 'वृक्ष-पूजा' की ओर संकेत करते हैं, जो भारतीय प्रजा में प्राचीनकाल से प्रचलित है।

हरियाणा प्रदेश में तोरण के पीछे जो किंवदंती प्रचलित है, वह इस प्रकार है- एक पिता ने अपनी छोटी सी कन्या को बात-बात में चिड़ों से ब्याहने की बात दी। कन्या बड़ी हुई। कन्या ने पिता को पुरानी बात स्मरण कराई और आग्रह किया कि वह उन्हीं से विवाह करेगी। चिड़े भी बारात लेकर आ पहुंचे। निर्णय हुआ कि जो शक्तिशाली हो, वही कन्या ले जाय।

विविध कथा-किवदंतियां :

राजस्थान में तोरण के पीछे महादेव-पार्वती को लेकर जो किंवदंती प्रचलित है, वह इस प्रकार सुनने को मिलती है-महादेवजी के लक्ष्मी नाम की अत्यन्त रूपवती कन्या थी। समय आया कि लक्ष्मी ने विवाह की उम्र में प्रवेश किया। पार्वती को उसकी शादी के लिए वर तलाश की चिन्ता हुई। पार्वती ने पुत्री के लिए शिवजी से अर्ज किया। दिन भर भांग के नशे में रहने के कारण शिवजी ने इस ओर कोई गौर नहीं किया।

पार्वती के बहुत कहने पर एक दिन नशे ही नशे में उन्होंने कई स्थानों का भ्रमण कर डाला और जहाँ-जहाँ भी स्वस्थ और सुन्दर तथा सुडौल लड़के दिखाई दिये उनके साथ वे लक्ष्मी की शादी की बात पक्की कर आये। यत्र तत्र बाग-बगीचों में घूमते-नाचते हुए मयूर तथा अन्य चिड़ों को देख उनका दिल प्रसन्नता के मारे प्रफुल्लित हो उठा, अत: उनके साथ भी उन्होंने लक्ष्मी का सम्बन्ध तै कर दिया।

नशा उतरने पर महादेवजी घर लौटे और पार्वती को सारी बात कह सुनाई। पार्वती उनकी ऐसी करनी पर और अधिक चिन्तित हो उठी और सोचने लगी कि लग्न के दिन जब सभी अपनी-अपनी बारातें सजाकर यहां उपस्थित हो जायेंगे तो उनसे किस तरह निपटारा किया जाएगा। शिवजी तो निश्चिन्त थे। यद्यपि उन्हें इस बात का ध्यान जरूर था कि वर के रूप में कई लड़के तथा चिड़े आ रहे हैं और लक्ष्मी तो केवल एक है। उन्होंने पार्वती को इस बात की तनिक भी चिन्ता न करने की बात कही और वे स्वयं घर से निकल पड़े ।

जाते-जाते उन्हें एक कुतिया मिली। उन्होंने कुतिया से कहा- कुतिया तुम्हारे आठ बच्चे हैं, उसमें से एक मुझे दे दो। कुतिया राजी हो गई और अपना एक बच्चा शिवजी को दे दिया। इसी प्रकार उन्हें शूकरी, गधी, घोड़ी, ऊंटनी, बिल्ली आदि कई प्राणी मिले। वे सबसे एक-एक बच्चा उठा लाये। घर लाकर लग्न के दिन कुछ समय के लिए शिवजी ने अपने जादू से उन्हें कन्या का रूप दे दिया। यथा समय, जहां भी महादेवजी शादी की बात पक्की कर आये, सभी वर वहां आ पहुंचे। महादेवजी ने सभी का खूब स्वागत सत्कार किया। अन्त में मयूर और अन्य चिड़ों की बारी आई तो महादेवजी ने चिड़ों को किसी प्रकार यह कह कर राजी कर लिया कि तुम सभी मेरे द्वार की शोभा हो। तुम्हें मैं यहीं अपने पास यत्नपूर्वक रखूंगा।

लक्ष्मी की शादी करने जो भी वर गृह-प्रवेश करेगा वह सबसे पहले तुम लोगों की साक्षी लेगा और तभी उसकी विवाह-विधि सम्पूर्ण होगी। चिड़े तो चिड़े ही ठहरे। बेचारे सभी राजी हो गए और फुदक-फुदक कर मुख्य द्वार पर बैठ गए। मयूर सबसे सुन्दर होने के कारण ऊपर-ही-ऊपर आसनस्थ हुआ। लक्ष्मी के साथ जो भी शादी करने आया वह बारी-बारी से सभी चिड़ों से प्रेमपूर्वक मिले। चिड़ों ने अपनी गर्दनें झुकाते हुए उन्हें प्रेमपूर्वक शादी करने की स्वीकृति दी। कहा जाता है कि तभी से उसी आकार एवं सज्जा के रूप में तोरण बनने प्रारम्भ हो गये और उनमें ऊपर-ही-ऊपर मयूर तथा अगल-बगल में चिड़े बैठाये जाने लगे।

तोरण चटकाने में तलवार का मोर पर वार किया जाता है। वार करते ही दूल्हा घोड़े को फिरा लेता है और उसके बाद शादी की रस्म पूरी की जाती है। बरात जब आती है तो भी सबसे महत्वपूर्ण कार्य तोरण वांदने का ही रहता है। तोरण वंद जाने के बाद लोग प्राय: निश्चिन्त हो जाते हैं। विवाह उसके बाद अपने ढंग से होता रहता है। तोरण वांदने में कभी-कभाक देरी हो जाती है तो बड़े-बूढ़े कहते भी हैं—तोरण वंद जाता तो ठीक था उसके बाद भले ही धीरे-धीरे शादी होती रहती, सारी रात पड़ी है। सच भी है, तोरण वांदते वक्त ही सारे-के-सारे बराती उपस्थित रहते हैं। जब यह रस्म पूरी हो जाती है तो कई बाराती अपने डेरे में चले जाते हैं। केवल वर के मित्र रह जाते हैं।

मोर से विवाह की कथा :

तोरण से लगे मोर और चिड़ियाओं की कई कथा किंवदंतियां मेरे सुनने में आईं पर उनसे यह स्पष्ट नहीं हुआ कि तलवार से दूल्हा मोर को क्यों मारता है और मारते ही तत्काल वह वहां से क्यों वापस मुड़ जाता है?

एक दिन जब यह चर्चा मैं अपनी मां से कर बैठा तो उसने एक कथा-सूत्र दिया जो इस प्रकार है- बहुत पुरानी बात है किसी राजा की कोई लड़की थी जिसने अपने महलों में से एक सुन्दर मोर को नाचते देख लिया। उस नाचते हुए मोर पर वह इतनी मुग्ध हो गई कि उसी के साथ शादी के लिए मचल पड़ी। राजा के लिए यह अजीब समस्या और परेशानी हो गई। इधर राजकुमारी बड़ी होने लगी तो राजा को और चिन्ता सताने लगी। किसी तरह राजकुमारी को समझाया गया और एक दिन निश्चय कर लिया गया कि उस दिन मोर से उसका विवाह रचाना है।

इधर राजा ने अपने सरदारों से मंत्रणा कर तय पाया कि एक अच्छा सा बड़ा तोरण बनवाया जाय जिस पर इतना सुन्दर मोर और चिड़े बिठाये जांय कि उनमें और असली मोर-चिड़ों में कोई भेद न कर पाये ताकि राजकुमारी उसे देखकर यही समझे कि उसकी शादी मोर से होने जा रही है। इधर राजा ने पंडित को भेजकर राजकुमारी का सगपण तै कर दिया और निश्चित तिथि पर बारातियों और दूल्हा के आने के कार्यक्रम बना लिये गये। सारे के सारे बाराती घोड़े पर बैठकर आयेंगे। दूल्हा सबसे आगे होगा और ऐन वक्त ज्योंही तोरण मुख्य द्वार पर लाया जायगा सारे बराती वहां पर टूट पड़ेंगे और दूल्हा अपनी तलवार से मोर को मार कर राजकुमारी को ले जायेगा। योजना के अनुसार यही सब कुछ हुआ। इससे राजकुमारी की हठ भी पूरी हुई और राजा की शोभा मर्यादा भी बनी रही। तब से इस प्रकार तोरण वांदने की प्रथा चली आ रही है ।

तोरण संबंधी लोकगीत :

राजस्थान में तोरण सम्बन्धी कई सुन्दर लोकगीत प्रचलित हैं। जब दूल्हा तोरण चटकाने आता है तब औरतें तोरण गीत द्वारा वर के प्रति मंगल भावना व्यक्त करती हैं-

आज म्हारा बनड़ाजी तोरण आय लुम्या ए
साइयां रो मन हरखियो।
आज म्हारा बनड़ाजी गामरा भंडारी ए
साइयां रो मन हरखियो।

तोरण पर कामण करते समय भी तोरण का कामण गीत गाया जाता है-

तोरण राज तोरण कामण कणी कीधा ?
म्हारी वरसी रा फूंदा पर कामण कणी कीधा?
म्हारे रेसम रा फूंदा पर कामण कणी कीधा?
म्हाने सूती ने जगाई ओ कामण कणी कीधा?
म्हाने बैठी ने जगाई ओ कामण कणी कीधा ?

एक अन्य माण्ड गीत में खातीड़े के पुत्र से चन्दन का तोरण बनवाकर उसमें मोतियों की चिड़ियां लगवाने की बात कही गई है। रेगिस्तानी इलाके का गीत इस प्रकार है-

अरे खातीड़ा रा बेटा थूं चतर सुजान
तोरणियो घड़लायो चनणकिये रूंखरो
अरे तोरणियो घड़लायो ए चनणकिये रूंखरो
तोरणियो रे धीमा मारू ए रतन रो ए जड़ाव
तीवो ए अरे गवियारे ओले जावूं
ओ चिड़कलियां रे मंडावां कोई
सांचोड़े झोले में मोतियां रे म्हारा राज।।

शिव शक्ति का प्रतीक यह तोरण विवाह संस्कृति का एक ऐसा सांस्कृतिक ठप्पा है जिसके बिना कोई भी प्राणी परिणयसूत्र में नहीं बंध सकता। अब जब उसे मनवांछित वर की प्राप्ति हो गई तो वह गणगौर पूजना कैसे भूलेगी। एक अन्य गीत में- 'राइबर डोलर्‌यो तोरण पै बनड़ी पूज रही गणगौर।'

घर के बाहर हाथी घुमाने से विवाह का मंगल होता है। कहा भी है- शुभ विवाह के कारणे हस्ती घूमे छे म्हारे घर के बारणे।

शब्द रंजन
उदयपुर, रविवार 01 दिसंबर 2024

सम्पादकीय

परम्पराओं का देश

सभी जानते हैं कि भारत परम्पराओं का देश है और इसी वजह से इसकी पहचान पूरे विश्व में बनी हुई है किन्तु परम्परा को ठीक से समझने वाले और उसको परिभाषित करने वाले विद्वानों ने बहुत अधिक विचार नहीं किया। बहुत से तो केवल यही समझ बैठे हैं कि सैकड़ों वर्षों से जो कुछ चला आ रहा है, वह अभी भी चला आ रहा है और उसके पीछे हमारी दृढ़ धारणा, आस्था, विश्वास और विचारशक्ति है।

यह भी कि हमारे बड़ेरों, पूर्व पुरुषों याकि पुरोधाओं ने अपने कर्मठ पुरुषार्थ और समय, समझ से जो सामाजिक-पारिवारिक दृष्टि बनाई और उसे पोषित की वही प्रवाह आगे वाली पीढ़ी द्वारा संरक्षित एवं सुरक्षित रूप से बनाये रखा। जो मर्यादाएं या जीवनमूल्य उन्होंने बनाये उन्हें हमने खण्डित नहीं कर सतत प्रवहमान किये रखा।

लेकिन यह धारणा भी पूर्णत: सत्य परिलक्षित नहीं होती। जब समय का चक्का स्थिर नहीं होकर निरन्तर परिवर्तनशील है तब परम्परा का अर्थ भी परिवर्तनीय बदलाव की धड़कन से जुड़ा लगता है।

यह दिगर बात है कि हम उसे कहां तक देख अथवा पकड़ पा रहे हैं। परम्परा के शाब्दिक अर्थ की बात करें तो पर के बाद का पर अर्थात् बाद और उसके बाद से है। इससे नितान्त अतीतप्रियता का सन्दर्भ नहीं लिया जा सकता। समय ठहरा हुआ स्थिर नहीं है। वह बदल रहा है पर हमारी मुट्ठी में उस तरह की पकड़-धकड़ से परे है तो कैद नहीं किया जा सकता।

कहा तो यह भी जाता है कि अपने को आधुनिक से आधुनिक तथा प्रगतिशील से प्रगतिशील कहे जाने वाले समाजों में भी परम्परा जीवित रहती है। ऐसा मानने वाले क्या यह मानते हैं कि परम्परा का खण्डन नहीं होता।

उसका मण्डन होना ही उसका बने रहना है। इससे लगता है कि परम्परा की परख के लिए हमें अपने दृष्टिकोण को व्यापक उदार बनाना होगा। सीमित और संकीर्ण दृष्टि से हमारा आकलन दोषपूर्ण ही कहा जायेगा। इससे एक तथ्य तो यह घटित हुआ लगता है कि अपनी विरासत का हर सन्दर्भ जो उपयोगी नहीं रहा उसे घटाते हुए उसमें कुछ नया जोड़ते उसे उपयोगी बनाये रखना भी है।

यह ठीक उसी तरह होगा जैसे किसी पुराने हुए अनुपयोगी कपड़े को हटाकर उसकी जगह नया अथवा उस पुराने से थोड़ा अधिक नया जोड़ते उसे उपयोगी बनाये रखना होता है जिसे कापा लगाना या उस स्थान विशेष को रफ्फू बनाते पुन: उपयोग में लेना होता है।

इसे सफलतापूर्वक यों भी समझ सकते हैं कि नदी का जो अनवरत बहाव हम देखते हैं उसमें कितना पानी पुराना और कितना नया मिला हुआ है, हम नहीं कह सकते पर बहता पानी निर्मला बना हुआ है। यही हमारी परम्परा की व्यावहारिक बौद्धिकता है जिसे हम अपनी पुरातनता को बचाते हुए उसमें नवीनता का परिदर्शन करते चलते चलायमान होते रहते हैं।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि जो परिवर्तन हम प्रकृति में, हमारे समय में देख रहे हैं वह अवश्यंभावी लगते हुए भी हमें बेखबर दिये रहता है। यह खबर में बेखबर का होना, लगना ही परम्परा है।

अलंकार आच्छा को दिया धींग पुरस्कार

चेन्नई (ह. सं.)। युगधारा का उमरावदेवी धींग साहित्योदय पुरस्कार 17 नवंबर को चेन्नई में कवि अलंकार आच्छा को प्रदान किया गया। राजस्थानी एसोसिएशन तमिलनाडु और साहित्यिक संस्था 'अनुभूति' के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. उदय प्रताप सिंह और उर्दू के शायर प्रो. वसीम बरेलवी ने अलंकार को माला, शॉल, मेवाड़ी पाग, साहित्य, कलम, स्मृति चिह्न,

सम्मान-पत्र और सम्मान राशि प्रदान करके धींग पुरस्कार से अलंकृत किया। पुरस्कार प्रवर्तक डॉ. दिलीप धींग ने बताया कि पिछले माह राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर में आयोजित पुरस्कार समारोह में अलंकार व्यक्तिश: भाग नहीं ले सके थे, अत: उन्हें यहाँ सम्मानित किया गया। इस अवसर पर तमिलनाडु राज्य अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य प्रवीण कुमार टाटिया, अनुभूति अध्यक्ष गोविंद मुंदड़ा सहित बड़ी संख्या में समाजसेवी, साहित्यकार और साहित्यप्रेमी उपस्थित थे।

शिवालिक और उसके लोकप्रसंग

-डॉ. प्रिया सूफी-

होशियारपुर जिला शिवालिक की खूबसूरत पहाड़ियों की तलहटी में बसा छोटा सा शहर है। हिमाचल के बहुत पास होने के कारण होशियारपुर को हिमाचल का द्वार कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। चिंतपूर्णी और ज्वालामुखी यहां बहुत करीबी सिद्ध पीठ हैं, जिनकी मान्यता दूर-दूर तक है। होशियारपुर से चिंतपूर्णी की दूरी मात्र 50 किलोमीटर है। होशियारपुर से चिंतपूर्णी तक बहुत से होटल रेस्टोरेंट और पिकनिक स्पॉट हैं, जहां होशियारपुर के लोग अक्सर छुट्टी वाले दिन जाया करते हैं।

होशियारपुर से चिंतपूर्णी के रास्ते में बिल्कुल बीचों बीच लगभग 26-27 किलोमीटर दूर हरे भरे वृक्षों से घिरा एक अन्य सिद्ध स्थान है शिवबाड़ी जो हिमाचल के ऊना जिले के गगरेट गांव में स्थित है। यह एक 5000 साल पुराना शिव मंदिर है जिसे द्रोण शिव मंदिर भी कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि कौरवों और पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य इसी गांव के निवासी थे। मंदिर में शिवलिंग एक पिंडी (एक गोलाकार पत्थर) के रूप में स्थित है। मंदिर के आसपास घना जंगल है जिसे स्थानीय भाषा में झिड़ी कहा जाता है। माना जाता है कि यहां का लिंग स्वयं निर्मित है। मंदिर में वीरभद्र, स्वामी कार्तिकेय, भगवान कुबेर तथा गणेशजी की मूर्तियां हैं। यह प्राचीन मंदिर अपनी आलौकिक शक्तियों के लिए प्रसिद्ध है।

मंदिर का पुरावृत्त :

शिव बारी मंदिर हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले के गगरेट गांव में स्थित है। यह लगभग 5000 साल पुराना एक प्राचीन मंदिर है। इसे द्रोण शिव मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि गुरु द्रोणाचार्य (पांडव और कौरव के गुरु) इस गांव के निवासी थे।

मंदिर गगरेट में अंबोटा गांव के घने जंगल के बीच स्थित है। बहुत से संतों ने यहां तपस्या की है। उनकी समाधि स्थल भी यहां इस मंदिर में है। मंदिर के चार दिशाओं में स्थित चार श्मशान हैं। भगवान शिव की कृपा से अपनी मनोकामना पूरी होने के बाद जम्मू और अम्ब के राजा द्वारा वहां चार कुंओं का निर्माण कराया गया।

मंदिर के चारों ओर पर्याप्त पेड़ हैं, जिनका उपयोग केवल श्मशान, यज्ञ, भंडारा, धुनी (साधुओं के लिए अग्नि स्थान) आदि के लिए किया जा सकता है। इन वृक्षों की लकड़ी का उपयोग किसी अन्य उद्देश्य के लिए नहीं किया जाता है (इसे भगवान शिव का आदेश माना जाता है)! पूजा के बाद जलहरी (पिंडी के आसपास की जगह) का पानी भक्तों पर छिड़का और मंदिर के मुख्य प्रसाद के रूप में दिया जाता है।

शिवरात्रि के दौरान एक बड़े मेले का आयोजन किया जाता है। माता चिंतपूर्णी के दर्शन करने आए श्रद्धालु यहां आकर मेले का लुत्फ उठाते हैं।

जनश्रुतियों में मंदिर का इतिहास :

ऐसा माना जाता है कि गुरु द्रोणाचार्य ग्राम अंबोटा के निवासी थे। मंदिर के पास हंस नाम की नदी बह रही है। हंस में पवित्र डुबकी लगाने के बाद, गुरु द्रोणाचार्य भगवान शिव की पूजा करने के लिए हिमालय जाते थे। यह उनका दैनिक अभ्यास था।

गुरु द्रोण की एक पुत्री थी, जिसका नाम ययाति था। एक बार ययाति ने अपने पिता से जिद की कि वह कहाँ जाते हैं। उसकी जिद देखकर गुरु ने उससे कहा, पहले तुम घर में विश्वास के साथ 'ओम् नम: शिवाय' का जाप करना शुरू करो, उसके बाद मैं तुम्हें सच्चाई बताऊंगा।

ययाति ने पिता की आज्ञा का पालन किया और विश्वास और पूर्ण एकाग्रता के साथ मंत्र का जाप करना शुरू कर दिया। कुछ दिनों के बाद, भगवान शिव उनकी गहरी भक्ति से प्रसन्न हो गए और उनके सामने प्रकट हुए। भगवान शिव स्वयं बालक बने और उसके साथ खेलने लगे।

इस तथ्य को एक दिन गुरु द्रोण भी जान गए। वह इस सत्य से हैरान रह गए। अब ययाति ने भगवान शिव से हमेशा के लिए यहीं रहने का अनुरोध किया। तब भगवान शिव लिंगम के रूप में यहां रहने के लिए तैयार हो गए। फिर, गुरु द्रोण ने यहां एक मंदिर का निर्माण किया और मंदिर के अंदर एक शिवलिंग स्थापित किया। एक अन्य मान्यता के अनुसार, यहां भगवान शिव माता चिंतपूर्णी मंदिर के दक्षिण में महारुद्र के रूप में चार महारुद्रों के अलावा चार दिशाओं में उनकी रक्षा के लिए हैं।

मुगलकाल की अविस्मरणीय घटना :

कहा जाता है कि एक बार मुगल बादशाह औरंगजेब अपने सैनिक के साथ यहां आए और मंदिर पर हमला कर दिया। उन्होंने पिंडी की खुदाई शुरू की। हैरानी की बात यह हुई कि उसी समय पिंडी से लाल रंग के कीड़े भारी मात्रा में निकलने लगे और सिपाहियों को काटने लगे। सिपाही उनसे किसी भी तरह न बच सके और बेसुध हो कर गिर गए। यह देखकर सम्राट ने भगवान शिव के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और अपने कृत्य के लिए क्षमा याचना की।

फिर ग्रामीणों ने उन पर जलहरी का लाया पवित्र जल छिड़का, जिससे सैनिक होश में आ गए। अलौकिक शक्ति के इस चमत्कार के बाद वे मंदिर से दूर भाग गए।

मंदिर की एक महत्वपूर्ण मान्यता के अनुसार वैशाख माह का दूसरा शनिवार सबसे अधिक पवित्र दिन माना जाता है। इस दिन भगवान शिव भक्तों की मनोकामना पूरी करते हैं।

बात चाहे पौराणिक हो या आधुनिक परंतु शिवबाड़ी के आसपास के वृक्ष अलग ही प्रकार के हैं। उनकी डालियां एक दूसरे में उलझी सी हैं। एक अजीब सी ठंडक उस सारे क्षेत्र में व्याप्त है। उनमें से निकलते हुए भय की एक सर्द लहर तन मन में दौड़ने लगती है। पता नहीं क्यों ऐसा प्रतीत होता है कि मंदिर में कोई अशरीरी ताकत आज भी विद्यमान है।

बच्चों को साहित्य से जोड़ने की पहल

अक्सर सुनने में आता है पहले बच्चे बाल कहानियों की किताबें चंपक, लोटपोट, नंदन, पराग, चंदामामा, बाल भारती आदि किताबें बहुत चाव से पढ़ते थे। वर्तमान समय से बच्चे इनसे दूर होते जा रहे हैं। आज कई प्रकार की बाल किताबें इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। बच्चें इंटरनेट पर इनको पढ़ते हैं। इस रुचि परिवर्तन से बाल साहित्य किताबों से स्वाभाविक दूरी हो गई है। नेट पर बाल साहित्य उपलब्ध है तो बाजार से किताबें खरीदने का चलन स्वत: ही कम हो गया। मनोवैज्ञानिक रूप से देखें तो किताबें पढ़ने से स्वस्थ मनोरंजन होता था और स्वास्थ्य पर किसी प्रकार का प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता था। स्मरण शक्ति भी मजबूत होती थी जबकि नेट पर आंखों पर भी विकिरण से प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। स्मरण शक्ति कमजोर होती है और शरीर पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव होता है।

इन बातों को ध्यान में रख बच्चों का रुझान पुन: बाल साहित्य पुस्तकों से जोड़ने के उद्देश्य से कोटा में संस्कृति, साहित्य, मीडिया फोरम द्वारा 26 सितंबर से 17 नवंबर तक बाल साहित्य मेले का आयोजन किया गया। मेले के दौरान साहित्य और पर्यटन, संस्कृति और साहित्य विषयों पर प्रश्नोत्तरी, बाल कवि सम्मेलन, कहानी सुनाओ, कविता गोष्ठी, चित्रकला और निबंध प्रतियोगिता के साथ बाल कविता लेखन के प्रोत्साहन के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

विशेषता यह रही कि इस आयोजन में महिला साहित्यकारों का अकल्पनीय और महत्वपूर्ण समर्थन मिला। उन्होंने आगे आकर 18 शिक्षण संस्थाओं में बाल साहित्य मेलों का आयोजन करवाया। कोटा के अलावा बारां जिले तक दूरस्थ क्षेत्रों में आयोजन किए गए। इसमें वरिष्ठ साहित्यकारों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। साहित्यकारों के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में करीब पांच हजार बच्चे प्रत्यक्ष रूप से जुड़े और भागीदार बने। समापन समारोह में विभिन्न आयोजनों में विजेता 65 बच्चों को पुरस्कृत किया गया और सहयोगी साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। साहित्यकार डॉ. हिमानी भाटिया, डॉ.अपर्णा पांडेय, डॉ. इंदुबाला शर्मा, डॉ. वैदेही गौतम, डॉ. प्रीति मीणा, विजय जोशी, महेश पंचोली, विजय शर्मा इस आयोजन के प्रमुख सारथी बने। वरिष्ठ साहित्यकार जितेंद्र 'निर्मोही' और रामेश्वर शर्मा 'रामू भइया' मार्ग दर्शक की भूमिका में रहे।

हाड़ोती के साहित्य जगत में साहित्यकारों ने इस कार्यक्रम को भावी पीढ़ी को साहित्य से जोड़ने की अनूठी और अभिनव पहल बताया। बच्चों को साहित्य से जोड़ने का एक अच्छा माहौल बना। जहां बच्चों ने इसमें खूब रुचि और उत्साह दिखाया वहीं साहित्यकार भी प्रेरित हुए ऐसे आयोजनों के लिए। इस अनूठे कार्यक्रम की चर्चा पूरे राजस्थान के साहित्यकारों के मध्य रही और सभी ने मुक्त कंठ से आयोजन को बच्चों में साहित्य के प्रति जागरूक करने के लिए एक सार्थक पहल बताया।

- डॉ. प्रभातकुमार सिंघल

अपना देश अपनी संस्कृति

गंजफा

गंजफा बड़े लोगों के खेलने का एक खेल होता है जिसमें ताश के पत्तों की तरह कुल 96 टिकटियाँ आठ रंगों में होती हैं। इन रंगों में चार रंग कच्चे तथा चार रंग पक्के होते हैं। पक्के रंगों में रूप, समसेर, ताज तथा गुलाम तथा कच्चे रंगों में चिट्ठी, चंग, मोर और बुकच्या नामक रंग होते हैं। इनमें रूप काला, समसेर कत्थई, ताज हल्का हरा, गुलाम पीला, चिट्ठी मूंगिया, मोर गहरा हरा, बुकच्या पीले ऊपर काला तथा चंग गहरा लाल रंग लिये होता है। एक-एक रंग की बारह-बारह टिकटियाँ होती हैं। प्रत्येक रंग में एक से दस तक की टिकटियाँ तथा एक वजीर और एक बादशाह होता है। इनमें सबसे बड़े वजीर बादशाह होते हैं पर रंगों के अनुसार पक्के रंगों में देहला तथा कच्चे में इक्का बड़ा होता है ।

छाबदार श्री भगवानजी (70) ने बताया कि गंजफा की टिकटियाँ गोल होती हैं। यह गोलाई 1-2 इंच व्यास लिये होती है। प्रत्येक टिकटी पर कोई न कोई चित्र बना रहता है और पहचान के लिये उस चित्र के आसपास गोल बिंदे, भाले, सातिये, चिड़िया, छोटे-छोटे जानवर या कोई भी मनपसंद चित्र होते हैं। ये जितनी संख्या में होते हैं, वह टिकटी उसी संज्ञा की सूचक होती है यथा - एक चित्र वाली टिकटी इक्का, दो वाली दुक्की, सात वाली सत्ती, ग्राठ वाली अट्ठी जैसी ताश में गिनती होती है। बादशाह वजीर शाही पोशाक में होते हैं। इस नाम की टिकटी पर इन्हीं बादशाह-वजीर के खानदानी चित्र उकेरे जाते हैं। ये चित्र मेवाड़ी चित्रकला की विशिष्ट शैली में चितेरे होते हैं। टिकटी को अधिकाधिक सुन्दर बनाने के लिये दो-दो, तीन-तीन, चार-चार रंगों में चितेरी जाती है।

यह खेल तीन व्यक्तियों का खेल है। 96 टिकटियों में से प्रत्येक के पास 32-32 टिकटियां रहती हैं। ताश की तरह यह खेल कई खेल लिये नहीं होता। यह एक ही तरह से खेला जाता है। ये टिकटियाँ हाथी दांत के अतिरिक्त मोटे जाड़े पुट्ठे की भी होती हैं। हाथी दांत की टिकटियाँ कीमती रंगों तथा सुवर्ण रंगी होती हैं। पुट्ठे टिकटियाँ लाख के रंगों में बड़ी चमकीली होती हैं।

हरलालजी धाभाई (85) ने मुझे बताया कि जब वे उदयपुर दरबार में सेज की ओवरी नामक कारखाने के हाकिम थे तब हाथी दांत व पुट्ठे के गंजफे के अतिरिक्त लकड़ी की टिकटी वाले गंजफे भी उनके चार्ज में थे । लकड़ी वाला गंजफा बसी के खेरादी बनाते थे। हरलालजी ने यह भी बताया कि ताश के पन्ने जितनी बड़ी गंजफा की टिकटियाँ भी उनके पास रहती थीं। यह खेल बड़े रईसों का था जो कभी-कभाक खेलते थे। हरलालजी ने इस खेल को कभी नहीं खेला। न वे जानते ही हैं कि यह कैसे खेला जाता है। बातचीत के दौरान हरलालजी ने मुझे एक और खेल का संकेत दिया जो शतरंज की ही तरह का होता था। इस खेल का नाम अतरंज था।

हाथी का मद

हाथियों के बारे में आम लोगों ने बहुत सारी बातें सुन रखी होंगी पर हाथियों के मद के बारे में लोगों को अधिक मालूम नहीं। उदयपुर के राजमहलों में किसी समय हाथियों की संख्या 99 थी। यह संख्या कभी कम नहीं हुई। कई बार इसे बढ़ाने का प्रयत्न किया गया पर ज्योंही एक नया हाथी खरीदा जाता पहले वाला कोई एक मृत्यु को प्राप्त होता। संख्या 99 की 99 रहती। इतने हाथियों की देखभाल के लिए खास इंतजाम भी रहता। कई महावत होते जो हाथियों की देखभाल करते।

उदयपुर में आज भी एक पूरी बस्ती का नाम महावतवाड़ी है जिसमें कभी महावत ही रहते थे। एक दिन मैं शायर इकबाल सागर के साथ इसी महावतवाड़ी में सर्वाधिक वयोवृद्ध (90) उलफत अली से भेंट करने चला गया।

मैंने उनसे मुख्यत: हाथी के मद और उसके संबंध में प्रचलित धारणाओं के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि हाथी का मद उसकी कनपटी के पास एक सुराख से बहता है। यह पानी की तरह होता है। चौमासे में हाथी अधिक मद करता है। अमूमन माह दो माह तक मद झरता रहता है। अच्छा हाथी चार-चार माह और आठ-आठ माह तक मद देता है। औरतों के लिए जैसे रजस्वला होना आवश्यक है उसी प्रकार हाथी के लिए मद देना। नहीं तो वह बीमार पड़ जायेगा।

मद के दिनों में हाथी को कड़ाई से बांध दिया जाता है और उससे कोई काम नहीं लिया जाता। यह मद हाथी स्वयं ही सूंड से चाट जाता है। बहुत कठिनाई से ही मनुष्य इसे प्राप्त कर सकता है और वह भी महावत ही। इस मद से कस्तूरी जैसी खूशबू आती है। यह मद कई रंग वाला होता है। सफेद भी, हरा भी, गुलाबी और लाल रंग का भी। काला रंग का तो होता ही है। यह मद बड़ा ताकतवर होता है। यदि आदमी उसका उपयोग कर ले तो उसकी ताकत में वृद्धि होती है।

उलफत अली ने बताया कि सिंदल नामक एक हाथी दरबार की सवारी का हाथी था। उसने छह माह तक मद दिया। यह मद काला था पर उसने किसी को लेने नहीं दिया। एक रामप्रसाद नाम का हाथी था। वह बेचारा बड़ा सीधा था। उसने मद लेने दिया। एक और बादल सरकार हाथी था। उसने भी लेने दिया। ताबीज व धूणी में भी मद बड़ा काम आता है।

उलफत अली के पास तीन-तीन हाथी थे जिनकी देखभाल वे स्वयं करते थे। जहां इनका काम उन्हें खिलाने पिलाने तथा ठीक ढंग से रखरखाव करने का था, वहां उन्हें ये सलाम करना, पिछले पांवों पर बैठना, नाचना सिखाते थे। वे उन्हें फेरते, टहलाते, जिमाते और उनकी चमक निकालते। आसोजी चेती दरसावे पर दरबार उनकी पूजा करते तब पांच हाथियों को सोने के जेवरों से खूब सजाया जाता।

इतने हाथियों के बांधने के भी विशिष्ट स्थान होते। उलफत अली ने बताया कि उदयपुर में पीपलिया, कोड़यात, केली, आड़, कालीवास, ऊंदरी, पोपलटी, बागदड़ा, मदारिया, धोयरा, भीलवाड़ा, बडूंदिया, पाट्यां, मजावत, मोटागांव, दाढ्या, खांखरी, गटामाता, उनावली, झाड़ोल, तिरपाल, ढोल, कट्यांबाड़, झींडोली, सेलुकाबाग आदि स्थानों पर हाथी बंधते थे। पटना के छतर के मेले से हाथी खरीद कर लाए जाते थे। उलफत अली इस मेले में दस-बारह बार गए। कभी दो हाथी, कभी तीन हाथी, कभी चार हाथी तो कभी तीन हथिनियां खरीदकर लाए। एक हाथी की कीमत पांच हजार की कूंती जाती।

मैंने उलफत अली से पूछा कि हाथी बदला लेने वाला जानवर कहा जाता है और बाजवक्त अपने महावत तक को नहीं छोड़ता है। यह भी सुना है कि उसके निमित्त भोजन में से यदि कोई थोड़ा चुरा लेता है तो उसे पता लग जाता है और ऐसी स्थिति में वह उसके प्राण तक ले सकता है। इस पर हंसते हुए उन्होंने कहा कि हाथी तो बड़ा बुजदिल होता है। वह बड़ा चमक वाला और भड़कीला होता है। उससे तो कुत्ते अधिक ठीक होते हैं जो चमकते-भटकते नहीं हैं। हाथी घास खाने वाली कौम है अत: बदला लेने की दुष्ट-वृत्ति उसमें नहीं पनपती। हाथी के रोट के नाम पर मिलने वाले आटे में से हजारों मन आटा बेचा गया है। किसी हाथी ने कोई बदला नहीं लिया।

यह पूछने पर कि क्या चींटी हाथी को मार सकती है ? वे बोले कि यह केवल सुना ही सुना जाता है। चींटी की क्या बिसात जो हाथी के मुंह लगे। उन्होंने बताया कि हाथी के मर जाने के बाद उसके नाखून और दांत काम के होते हैं, शेष भाग नहीं। हथिनी अठारह महीने गर्भ धारण करती है। हाथी का बच्चा या मखना हाथी, जिसके दांत नहीं निकलते, चार वर्ष तक दूध पीता है और अधिक ताकतवर होता है।

दांत वाला हाथी ढाई वर्ष तक दूध पीता है, फिर उसके दांत हथिनी को चूभने लगते हैं और वह दूध पिलाना बंद कर देती है। उलफत अली हाथियों की हर नब्ज पहचानते हैं। उसके चाल-चलावे, प्रकृति, आदत, नाज-नखरे आदि सबके संबंध में उन्हें बहुत अच्छी जानकारी है। हाथी को कब क्या देना चाहिए, कितना खिलाना-पिलाना चाहिए, किस मौसम में उसे किस तरह रखना चाहिए आदि के संबंध में उन्हें सारी बातें मुंह-जुबानी याद हैं। हर प्रकार की बीमारी का इलाज उनकी जबान पर है।

हम जब उनके घर से चले तो कुछ दूर तक वे हमारे साथ आए। इतने में उधर से एक हाथी गुजरा। उन्होंने उसे देखते ही कह दिया कि यह बीमार है। उसकी बीमारी का नाम भी बता दिया और इलाज भी। बोले, हाथियों में तो मैंने पूरी जिंदगी बिताई है। मैंने ही नहीं, मेरे बाप-दादों ने भी यहां काम किया है। यह भी विद्या है। आप कभी फुरसत से आओ तो एक पोथी जितनी बातें बता दूं।

सांपों के देव के रूप में ख्यात गोगाजी

राजस्थान 'डगै-डगै देवरा' और 'पगै-पगै देव' की धरती रही है। इसलिए यहां जितने देवी-देवता मिलेंगे, उतने शायद ही किसी अन्य प्रान्त में हों। बड़ल्या हींदवा नामक नौ लाख देवियों का स्थान भी इसी भूमि में है। राजस्थान तथा राजस्थान के बाहर मध्यप्रदेश, गुजरात आदि के देवरों में स्थापित होने वाली लोक प्रतिमाएं भी यहीं के कुम्हारों द्वारा बनाई जाती हैं। इन प्रतिमाओं में कुछ देवता ऐसे हैं जो ऐतिहासिक वीर पुरुष हैं जो अपने अलौकिक, असाधारण एवं वीरतापरक कार्यों के कारण लोकजीवन में देवता के रूप में पूजित हुए। इनमें रामदेवजी, पाबूजी, तेजाजी तथा गोगाजी मुख्य हैं।

वीरवर गोगाजी गायों की रक्षा के कारण देवत्व को प्राप्त हुए। ये बड़े योद्धा एवं चमत्कारिक पुरुष थे। मुख्यतः सांपों के देवे के रूप में इनकी बड़ी धाक है। इनके भोपे सर्प कटे व्यक्ति को जहर चूस कर चंगा करते हैं। सांपों पर असाधारण अधिकार होने के कारण गर्भावास में ही इन्होंने सांपों पर विजय प्राप्त कर ली थी। पालने में भी इन्हें सांपों से खेलते हुए देखा गया और सिरिअल से विवाह करने में जो संकट इन्हें झेला पड़ा उसका मुकाबला भी इन्होंने बंशी बजाकर नागों को अपने अधीन कर लिया। वासिक की आज्ञा से तातिग ने सिरिअल से गोगा का विवाह कराने में सहायता की।

प्रणवीर पाबूजी की तरह इन्होंने भी मुसलमानों तथा अपनी मौसी के दो पुत्रों को मौत के घाट उतार कर गायों को बचाया। मौसी के इन लड़कों को मारने के समाचार जब गोगाजी की माता बाछल ने सुने तो वह उन पर अत्यन्त क्रोधित हुई और उन्हें कभी मुंह नहीं दिखाने को कह दिया। इस पर कहते हैं, गोगाजी अपनी लीली घोड़ी पर सवार हो वहां से चल दिये और गूगामेड़ी जाकर भूमि समाधि ली। भूमि समाधि वाला यह स्थान बीकानेर जिले की नोहर तहसील से आठ कोस पूर्व की ओर है। यहां गोगा नवमी को बड़ा भारी मेला भरता है जो लगभग डेढ़ माह तक चलता है। इस मेले में राजस्थान के अतिरिक्त मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात, हरियाणा, हिमाचलप्रदेश, बंगाल, बिहार तक के लोग हजारों की संख्या में दर्शनार्थ एवं सर्प भय मुक्ति हेतु आते हैं। गोगाजी के भक्त जुलूस के रूप में पैदल चल कर गाते-बाजते हुए मेले के लिए मचल पड़ते हैं।

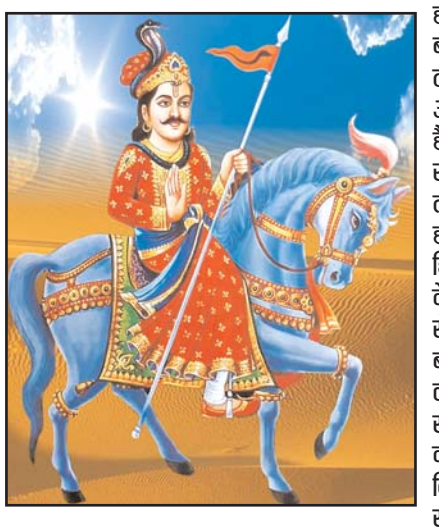

इनके आगे ही आगे गोगाजी का भारी वजनी निसांण होता है। यह निसांण दस-दस फीट के लम्बे बांस पर नीला अथवा काला रंग का कपड़ा लगाकर बनाया जाता है। इस कपड़े पर कपड़ों को काट-काट कर सांपों के चित्र सिले हुए होते हैं। बांसों के ऊपरी भाग को मयूरपंख, कोड़ियों तथा कांचलियों से बड़ी कलात्मक सज्जा दे दी जाती है। यह निसांण आढ़ा-टेढ़ा नहीं रख कर बिल्कुल सीधा रखा जाता है। इसके नीचे वाले भाग को निसांण वाला अपनी नाभि के नीचे स्थान पर कपड़े से बांधे रखता है। भक्तों के हाथों-गलों में तरह-तरह के काले, पीले, सफेद, चितकबरे सांप फणकारते हुए शोभित होते हैं। कुछ लोग लोहे की बड़ी-बड़ी सांकलों से अपनी पीठ ठोकते रहते हैं। यह दृश्य बड़ा ही अद्भुत तथा रोमांचकारी होता है। गोगाजी हिन्दू चौहान राजपूत थे परन्तु रामदेवजी की तरह मुसलमान भी इन्हें उतनी ही आदर-पूजा देते हैं इसीलिए हिन्दुओं के गोगाजी मुसलमानों के गूगा पीर, जाहर पीर के नाम से प्रसिद्ध है। गुर, गुग्गा तथा बागड़वाला के नाम से भी लोकजीवन में चितारे जाते हैं। सर्प का जहर दूर करने के कारण ये जहर देव के रूप में भी विख्यात हैं। गुग्गा के प्रसाद से संतान प्राप्ति तथा धन धान्य की वृद्धि होती हुई देखी-सुनी गई है।

यह एक विचित्र संयोग ही है कि गोगाजी के हिन्दू मन्दिर का पुजारी मुसलमान है। मन्दिर में कोई प्रतिमा नहीं होकर केवल एक चबूतरा बना हुआ है। साथ ही मन्दिर की गुम्बज की जगह मीनारें हैं जो क्या हिन्दू, क्या मुसलमान प्रत्येक जाति के लिए श्रद्धा, आस्था और आदर का आकर्षण बनी हुई है। किंवदन्ती है कि गोरखनाथ की दी हुई गूगल से लीली घोड़ी, नरसिंह पाण्डे, मज्जू चमार, रतनसिंह भंगी तथा स्वयं गोगा; ये पांचों एक साथ पैदा हुए इसलिए ये पांच पीर के नाम से जाने जाते हैं। यही कारण है कि गोगा थानों में कहीं-कहीं गोगाजी के साथ-साथ इन चारों की भी पूजा की जाती है।

गोगाजी पर लोगों की अटूट श्रद्धा, आस्था के फलस्वरूप उनके सम्बन्ध में कई गाथाएं और गीत सुनने को मिलते हैं। हरियाणा में तो गूगा पीर- जाहर पीर नाम से एक राग ही अलग चलती है जिसे गोगा भक्त पण्डे गाते हैं। इधर सन्त योद्धाओं से सम्बन्धित कथओं को भी गूगा चक्र की संज्ञा मिली हुई है। गोगा नवमी को महिलाएं व्रत रखती हैं। गोगा नवमी के पहले सप्तमी को बभूतासिंह, अष्टमी को केशरिया कुंवर तथा दशमी को तेजाजी की पूजा की जाती है। ये चारों ही देवता नागदेव के रूप में पूजित-प्रतिष्ठित हैं। नवमी के दिन गोगाजी के रूप में मिट्टी का घोड़ा पूजा जाता है। घोड़े पर मिट्टी की बनी गोगा-प्रतिमाएं कुम्हारिनें बनाती हैं। गृह स्वामिनियां पुजापे में राखी, खीर, नारियल आदि चढ़ा कर इनकी पूजा करती हैं।

गांवों में औरतें अपने घर की दीवालों पर हरिये गोबर (लीपली) की सहायता से गोगाजी के भांत-भांत के थापे बनाती हैं। इनमें कहीं सर्प के साथ गोगाजी, कहीं शमी वृक्ष और गोगाजी, कहीं सर्प और सिरिअल का गठबन्धन तथा कहीं गोगाजी को लीली घोड़ी पर बैठा हुआ दिखाया जाता है। शमी वृक्ष में गोगाजी का निवास माना जाता है। इसीलिए राजस्थान में 'गांव-गांव गोगा ने गांव-गांव खेजड़ी' कहावत बड़ी प्रसिद्ध है। गोगाजी के कई ख्याल भी प्रचलित हैं जो रात-रात भर बड़े उत्साह, आनन्द, उल्लास और श्रद्धापूर्वक खेले जाते हैं। -**म. भा.**

समाचार / विचार

एचडीएफसी सर्वश्रेष्ठ निजी बैंक पुरस्कार से सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के अग्रणी निजी क्षेत्र के बैंक एचडीएफसी बैंक को प्रोफेशनल वेल्थ मैनेजमेंट (पीडब्लूएम) द्वारा आयोजित ग्लोबल प्राइवेट बैंकिंग अवार्ड्स 2024 में 'भारत में सर्वश्रेष्ठ निजी बैंक' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। फाइनेंशियल टाइम्स द्वारा प्रकाशित - एक प्रमुख वैश्विक व्यावसायिक प्रकाशन - प्रोफेशनल वेल्थ मैनेजमेंट (पीडब्लूएम) निजी बैंकों और उनके संचालन वाले क्षेत्रीय वित्तीय केंद्रों की विकास रणनीतियों का विश्लेषण करने में माहिर है। ग्लोबल प्राइवेट बैंकिंग अवार्ड्स ने खुद को दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित निजी बैंकिंग पुरस्कारों के रूप में मजबूती से स्थापित किया है और अब अपने सोलहवें वर्ष में हैं। एचडीएफसी बैंक के ग्रुप हेड - इन्वेस्टमेंट बैंकिंग, प्राइवेट बैंकिंग, इंटरनेशनल बैंकिंग, डिजिटल इकोसिस्टम और बैंकिंग एज ए सर्विस (बीएएएस) राकेश के सिंह के अनुसार, संपत्ति में इस तेज उछाल को बनाए रखने के लिए एक 'हब-एंड-स्पोक' बिजनेस मॉडल का निर्माण करना और साथ ही बैंक के कर्मचारियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि करना महत्वपूर्ण है।

एयरबीएनबी के होस्ट के रूप में काम करेंगी सारा अली खान

उदयपुर (ह. सं.)। फिटनेस एवं ट्रैवल को लेकर लोकप्रिय अभिनेत्री सारा अली खान पहली बार एक्सक्लूसिव वेलनेस एवं योगा रिट्रीट क्यूरेट एवं होस्ट करने के लिए तैयार है। यह रिट्रीट गोवा में एयरबीएनबी की खास लोकेशन पर होगा, जिसमें चार अतिथियों को हिस्सा लेने का मौका मिलेगा। एयरबीएनबी में भारत, दक्षिणपूर्व एशिया, हांगकांग और ताइवान के जनरल मैनेजर अमनप्रीत बजाज ने कहा कि सारा को भागमभाग वाले अपने सिनेमैटिक करियर और फिटनेस के प्रति समर्पण के बीच संतुलन के लिए जाना जाता है। अब वह वेलनेस और योग के लिए अपने उत्साह को गोवा में एयरबीएनबी के साथ रिट्रीट के माध्यम से सबके सामने ला रही हैं। इसमें हिस्सा लेने वाले अतिथि प्रकृति की खूबसूरत वादियों में सारा के साथ योग का आनंद लेंगे और उन्हें सारा की व्यक्तिगत वेलनेस से जुड़े राज भी जानने का मौका मिलेगा।

सारा ने कहा कि एयरबीएनबी पर इस खास वेलनेस एवं योगा रिट्रीट में अतिथियों का स्वागत करने के लिए मैं उत्साहित हूं। प्रकृति की खूबसूरती के बीच हम मन, शरीर और अंतर्रात्मा की शांति पर फोकस करेंगे और साथ मिलकर यादगार क्षण बनाएंगे।

ईकार्ट की तीन वर्षों में आठ गुना वृद्धि

उदयपुर (ह. सं.)। भारत की अग्रणी 4पीएल कंपनियों में शुमार ईकार्ट अपनी उन्नत टेक्नोलॉजी व परिचालन उत्कृष्टता के साथ लॉजिस्टिक्स सेक्टर में लगातार बदलाव ला रही है। ईकार्ट ने परिचालन को विस्तार दिया है और सप्लाई चेन को मोनेटाइज करने के इसके प्रयासों ने पिछले तीन वर्षों में 8 गुना विकास दर्ज किया है। प्रतिदिन 60 लाख से अधिक शिपमेंट की क्षमता के साथ ईकार्ट का लास्ट-माइल नेटवर्क 98 प्रतिशत भारतीय पोस्टल कोड तक फैला हुआ है, जिसे 5 करोड़ क्यूबिक फीट से अधिक की वेयरहाउसिंग और 7,000 ट्रकों के बेड़े से ताकत मिलती है। इन क्षमताओं से भारत में ईकॉमर्स ब्रांडों के लिए ऑर्डर के अगले दिन डिलीवरी में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और क्षेत्रीय कवरेज में 40 प्रतिशत का विस्तार हुआ है। ईकार्ट के चीफ बिजनेस ऑफिसर मणि भूषण ने कहा कि हम ड्राइविंग एफिशिएंसी व स्केलेबिलिटी पर ध्यान देते हुए इंडस्ट्री-फर्स्ट टेक्नोलॉजी विकसित करने और सप्लाई चेन इनोवेशन के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारा मानना है कि सप्लाई चेन को लेकर हमारी गहरी समझ और एफिशिएंसी की दिशा में हमारा सतत प्रयास न केवल हमारी सर्विस लेने वाले ब्रांड्स के लिए, बल्कि समग्रता में भारत के पूरे लॉजिस्टिक्स इकोसिस्टम के लिए बदलाव का बड़ा कारक है।

ट्रांसपोर्टेशन एंड लॉजिस्टिक्स फंड लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। कोटक महिंद्रा एसेट मैनेजमेंट कंपनी लि. (केएमएएमसी /कोटक म्यूचुअल फंड) ने अपना न्यू फंड ऑफर कोटक ट्रांसपोर्टेशन एंड लॉजिस्टिक्स फंड लॉन्च किया है। यह ट्रांसपोर्टेशन और लॉजिस्टिक्स थीम पर आधारित एक ओपन-एंडेड इक्विटी स्कीम है। यह स्कीम 09 दिसंबर को बंद होगी। कोटक महिंद्रा एसेट मैनेजमेंट कंपनी लि. के मैनेजिंग डायरेक्टर, नीलेश शाह ने कहा कि कोटक ट्रांसपोर्टेशन एंड लॉजिस्टिक्स फंड का उद्देश्य ट्रांसपोर्टेशन, लॉजिस्टिक्स और संबंधित गतिविधियों में लगी कंपनियों की इक्विटी और इक्विटी से संबंधित सिक्योरिटीज में मुख्य रूप से निवेश करके लॉन्ग टर्म में हाई रिटर्न हासिल करना है। इस थीम में ट्रांसपोर्टेशन इंफ्रास्ट्रक्चर, लॉजिस्टिक्स सर्विसेज और कुशल व सस्टेनेबल ट्रांसपोर्टेशन के लिए इनोवेटिव समाधानों में शामिल बिजनेस के साथ-साथ इन सेक्टर का समर्थन करने वाली वित्तीय कंपनियों से जुड़े बिजनेस भी शामिल हैं।

कोटक महिंद्रा एसेट मैनेजमेंट कंपनी लि. के चीफ इन्वेस्टमेंट ऑफिसर - इक्विटी एंड फंड मैनेजर, हर्ष उपाध्याय ने कहा कि ट्रांसपोर्टेशन और लॉजिस्टिक्स थीम को बढ़ती खपत, प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में बढ़ोतरी, ई-कॉमर्स, ऑटो और ऑटो-एंसिलरी बिजनेस में ग्रोथ जैसे कई फैक्टर से लाभ मिल रहा है। एक कुशल लॉजिस्टिक्स नेटवर्क बनाकर ट्रांसपोर्टेशन (परिवहन) संबंधी लागत को कम करने पर सरकार का फोकस, न सिर्फ सेक्टर की ग्रोथ में मदद करेगा बल्कि नई कंपनियों को इसमें प्रवेश के लिए भी प्रोत्साहित करेगा।

गोत्र : भारतीयों की विशिष्ट पहचान

भोपाल (ह. सं.)। लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर के 300वीं जयंती वर्ष के अवसर पर महेश्वर में नीमाड़ उत्सव के दौरान गोत्र : उद्भव, मान्यता और प्रतीक विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

जनजातीय लोककला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल के निदेशक धर्मेंद्र पारे के संयोजन में इस संगोष्ठी में भारतीय गोत्र व्यवस्था के उद्भव और मान्यता पर पूर्वाग्रहों से घिरे तथाकथित आधुनिक समाजों को तमाम सामाजिक कुंठाओं से ऊपर उठकर इस विषय पर नए सिरे से विचार करने का आह्वान किया गया। चौमासा के इसी विषय पर संपादित आलेखों के विशेषांक का लोकार्पण भी हुआ।

उद्घाटन अवसर पर प्रसिद्ध संत स्वामी समानन्द गिरि ने गीता और अन्य ग्रंथों के आलोक में वर्ण, गोत्र और समाज व्यवस्था की शुद्धि को रेखांकित किया और इस शुद्धि की मान्यता को वैज्ञानिक बताया। डॉ. पारे ने गोत्र व्यवस्था पर विचार को विश्व के लिए महत्वपूर्ण कहा।

भारतीय विद्या के अध्येता डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने गोत्र परिकल्पना को ऋषियों का बड़ा अवदान कहा जो संपूर्ण उप महाद्वीप में शुद्धि, संस्कार और श्राद्ध के संकल्प के रूप में स्मरणीय है। वर्ण जातियों, गोत्र, प्रवर आदि सामाजिक पहचान ही नहीं, समूह और संगठनों के सूचक और अपनत्व की पहचान है। दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान, भोपाल के निदेशक डॉ. मुकेशकुमार मिश्रा ने गोत्र व्यवस्था को भारतीय समाज के सुरक्षा दुर्ग के रूप में रेखांकित किया।

तीन दिवसीय इस संगोष्ठी में नागर, आरण्यक एवं घुमंतू समाजों की गोत्र परंपरा पर अध्येताओं ने विस्तृत जानकारी प्रदान की। विशेषकर भील, गोंड, यदुवंशी, बैगा, भैना, कुचबंधिया, वाघरी, पारधी, कोरवा, बेड़िया, खरवार, बंजारा, भारिया, सहरिया, भिलाला, कोरकू, बहुरूपिया, कायस्थ, भगोरिया, सिकलीगर, गुज्जर, बरवाला, स्वर्णकार, भारद्वाज, अग्रवाल वैश्य समाजों की गोत्र परंपरा पर महत्वपूर्ण, शोध सर्वेक्षण आधारित जानकारियां साझा की। सभी शोध पत्र गंभीर विमर्श के केंद्र में भी रहे।

विद्वानों में ब्रजेन्द्र सिंहल (नई दिल्ली), प्रवीन कुमार (धर्मशाला), उपेन्द्रदेव पाण्डेय (वाराणसी), डॉ. सीमा सूर्यवंशी (छिंदवाड़ा), डॉ. अनिता सोनी (लखनऊ), डॉ. नेत्रा रावणकर (उज्जैन), माधवशरण पाराशर (डिंडोरी), शिवम शर्मा (छतरपुर), करणसिंह (पिछोर), डॉ. शोभासिंह (गुना), प्रकाशचंद्र कसेरा (जौनपुर), डॉ. योग्यता भार्गव (अशोकनगर), गोपी सोनी (कबीरधाम), डॉ. श्रीकृष्ण काकड़े (अकोला), डॉ. भुवनेश्वर दूबे (मीरजापुर), इन्द्रनारायण ठाकुर (नई दिल्ली) डॉ. पूजा सक्सेना (भोपाल), डॉ. विभा ठाकुर (नई दिल्ली), डॉ. लक्ष्मीकांत चंदेला (रीवा), डॉ. टीकमणि पटवारी (छिंदवाड़ा), डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव (ग्वालियर), डॉ. सत्या सोनी (उमरिया), डॉ. दीपा कुचेकर (नाशिक), स्वाति आनंद (बिलासपुर), उमा मिश्रा (जयपुर) गणेशकुमार तुमड़ाम (पांडुरना), डॉ. कमला नरवरिया (भिंड), डॉ. तरुण दांगौड़े (खंडवा), डॉ. अलका यादव (बिलासपुर), सुश्री काजल (बागपत), डॉ. अर्पणा बादल (भोपाल), डॉ. खेमराज आर्य (श्योपुर), अनिशकुमार सिंह (सोनभद्र), छोगालाल कुमरावत (खरगोन), डॉ. बसोरीलाल इनवाती (सिवक), डॉ. अल्पना त्रिवेद्वी (भोपाल), रामकुमार वर्मा (दुर्ग), अरुणकुमार शुक्ला (इंदौर), पीसीलाल यादव (खैरागढ़), ज्ञानेश चौबे (हरदा), नीलिमा गुर्जर (भोपाल), मुकेशकुमार जैन (बाड़मेर), भावेश वी. जाधव (सूरत), डॉ. आर. पी. शाक्य (भोपाल) ने शोधपत्र प्रस्तुत किए।

आईआईआईडी ने ओल्ड सिटी की दीवारों को बनाया सुंदर

उदयपुर (ह. सं.)। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीरियर डिज़ाइनर्स (आईआईआईडी) की उदयपुर चैप्टर की और से उदयपुर के ओल्ड शहर में दीवारों के जीर्णोद्धार के लिए किए जा रहे कार्य का समापन 22 नवंबर शाम को जयवाना हवेली में हुआ।

उदयपुर चेप्टर की हेड अंजलि दूबे ने बताया कि आईआईआईडी का ओल्ड शहर में झील के किनारों को सुंदर बनाने की दिशा में लिया गया एक नया कदम है। यह आर्किटेक्ट्स और युवाओं की एक कलात्मक पहल है। आईआईआईडी और निपोन पेंट्स ने बेहद सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने कहा कि हर काम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) से नहीं किया जा सकता। कुछ कार्यों में मानव रचनात्मकता और संवेदनशीलता का होना आवश्यक है। अंजलि दूबे ने बताया कि चेप्टर ने उदयपुर के ओल्ड सिटी में लालघाट के पास से लेकर अंदर आगे जाने वाले जो दीवारे हैं, उनको ठीक करने का काम हाथ में लिया जो पिछले दिनों से किया जा रहा है। इन दीवारों की रिपयेरिंग का काम करते हुए पेंटिंग्स से उनकी सुंदरता को बढ़ाया गया है। इन दीवारों पर यह कार्य पूरा हो चुका हैं और आज इस कार्यक्रम में मुंबई से आए अतिथियों के सामने पूरी रूपरेखा रखी गई। इसमें आईआईआईडी के अध्यक्ष सरोश एच वाडिया और इनस्केप संपादक जबीन ज़कारियास के साथ आईआईआईडी अधिकारी, नागरिक, कलाकार और स्टूडेंट की उपस्थिति रही। इस दौरान इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीरियर डिज़ाइनर्स की मैग्जीन का भी विमोचन किया गया।

सरोश एच वाडिया ने बताया कि हम अच्छे डिजाइन की शक्ति के माध्यम से बेहतर भविष्य को आकार देने के लिए पहले से कहीं अधिक प्रतिबद्ध हैं। श्रृंखला के सात फोलियो में से प्रत्येक हमारे निर्मित पर्यावरण के एक अनूठे पहलू को दर्शाता है, जो सामूहिक रूप से एक आवश्यक संग्रहकर्ता का सेट बनाता है।

लोरेंजो सर्चेज फॉर द मीनिंग ऑफ लाइफ ने 7वां जेसीबी पुरस्कार जीता

उदयपुर (ह. सं.)। स्पीकिंग टाइगर बुक्स द्वारा प्रकाशित उपमन्यु चटर्जी द्वारा लिखित लोरेंजो सर्चेस फॉर द मीनिंग ऑफ लाइफ को साहित्य के लिए 2024 जेसीबी पुरस्कार के विजेता के रूप में घोषित कर 25 लाख रुपये के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

यह कार्यक्रम जेसीबी इंडिया मुख्यालय, बल्लभगढ़ में आयोजित किया गया था। प्रतिष्ठित ट्रॉफी, जो दिल्ली के कलाकार जोड़ी, ठुकराल और टैगरा द्वारा बनाई गई एक मूर्ति है, जिसका शीर्षक 'मिरर मेल्टिंग' है,

उपमन्यु चटर्जी को प्रदान की गई। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार जेसीबी के चेयरमैन लॉर्ड बैमफोर्ड की ओर से जेसीबी इंडिया के सीईओ और एमडी दीपक शेट्टी द्वारा प्रदान किया गया। शेट्टी ने कहा कि साहित्य के लिए जेसीबी पुरस्कार की परिकल्पना लॉर्ड बैमफोर्ड द्वारा भारतीय साहित्य की भारतीयता का जश्न मनाने के लिए की गई थी। पिछले कुछ वर्षों में इस पुरस्कार ने कुछ सबसे विविध कार्यों को आकर्षित किया है और यह वर्ष भी कुछ अलग नहीं है। उन्होंने इस मौके पर पूरे जेसीबी परिवार की ओर से उपमन्यु चटर्जी की लोरेंजो सर्चेस फॉर द मीनिंग ऑफ लाइफ को बधाई दी।

नाथद्वारा में भारत का पहला क्रिकेट स्टेडियम होटल खुलेगा 2025 में

उदयपुर (ह. सं.)। भारत का पहला शानदार क्रिकेट स्टेडियम होटल (एमपीएमएससी) राजस्थान के पवित्र शहर नाथद्वारा में 2025 में खुलने जा रहा है। मिराज ग्रुप की तरफ से बनाये जानेवाला यह होटल रेडिसन होटल समूह द्वारा संचालित किया जाएगा। यह भारत का सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम होटल है, जिसमें शानदार आवास के साथ लाइव क्रिकेट देखने की सुविधा है। इसमें 234 आलीशान कमरे होंगे। उनमें से 75 प्रतिशत कमरों में से क्रिकेट मैदान का अनोखा नजारा दिखेगा। यहां ठहरने वाले मेहमान अपने कमरे में बैठकर आराम से क्रिकेट का आनंद ले सकेंगे। यह होटल विलासिता और डिज़ाइन का सही मिश्रण होगा। आतिथ्य सत्कार और क्रिकेट के प्रति जुनून, दोनों मामले में यह एक नया मानक स्थापित करेगा। इस नवोन्मेषी खेल परिसर में रहकर मदन पालीवाल की दूरदर्शिता और रेडिसन के उत्कृष्ट आतिथ्य का अनुभव लेने के लिए तैयार हो जाइए।

अपोलो कैंसर सेंटर में 'लंगलाइफ स्क्रीनिंग प्रोग्राम' की शुरुआत

उदयपुर (ह. सं.)। अत्याधुनिक कैंसर केयर में अग्रणी अपोलो कैंसर सेंटर ने फेफड़ों के कैंसर का आरंभिक स्तर पर एवं जल्दी से पता लगाने के लिए भारत का पहला लंगलाइफ स्क्रीनिंग प्रोग्राम शुरू किया है। इस अभूतपूर्व पहल का उद्देश्य फेफड़ों के कैंसर से लड़ना है, जो भारत में सभी प्रकार के कैंसरों का 5.9 प्रतिशत तथा कैंसर से संबंधित मौतों का 8.1 प्रतिशत कारण है।

डॉ. राहुल जालान, कंसल्टेंट, इंटरवेंशनल पल्मोनोलॉजी, अपोलो हॉस्पिटल्स, अहमदाबाद ने कहा कि फेफड़ों का कैंसर विश्व स्तर पर सबसे घातक कैंसरों में से एक है, लेकिन समय पर पता लगने से बचने की संभावना काफी बढ़ जाती है। हमारे लंगलाइफ स्क्रीनिंग प्रोग्राम के माध्यम से, हमारा लक्ष्य, एडवांस्ड लो-डोज़ टेक्नोलोजी का उपयोग करके उच्च जोखिम वाले व्यक्तियों की शीघ्र पहचान करना है, जो निदान परिशुद्धता को अधिकतम करते हुए रेडिएशन जोखिम को न्यूनतम करता है। यह कार्यक्रम विशेष रूप से उन व्यक्तियों के लिए प्रभावशाली है जिनका धूम्रपान, पेसीव धूम्रपान या फेफड़ों के कैंसर का पारिवारिक इतिहास रहा है।

डॉ. आकाश शाह, कंसल्टेंट, मेडिकल ऑन्कोलॉजी, अपोलो हॉस्पिटल्स, अहमदाबाद ने कहा कि यह कार्यक्रम अत्याधुनिक लो डोज़ सीटी स्कैन का लाभ उठाता है, जिससे मरीज की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए सटीक निदान सुनिश्चित होता है। साथ मिलकर, हम न केवल कैंसर का इलाज कर रहे हैं, बल्कि समय पर हस्तक्षेप और व्यक्तिगत ज़रूरतों के अनुरूप समग्र देखभाल के ज़रिए जीवन बदल रहे हैं। डॉ. रुशित शाह, कंसल्टेंट, मेडिकल ऑन्कोलॉजी, अपोलो हॉस्पिटल्स,अहमदाबाद ने कहा कि फेफड़ों का कैंसर एक मूक खतरा है, जिसका पता अक्सर तब चलता है जब यह काफी बढ़ चुका होता है, इसलिए इसका समय पर पता लगाना महत्वपूर्ण हो जाता है।

श्रीराम फाइनेंस ने राहुल द्रविड़ के साथ शुरू किया कैंपेन टुगेदर, वी सोअर

उदयपुर (ह. सं.)। श्रीराम ग्रुप की प्रमुख कंपनी श्रीराम फाइनेंस ने राहुल द्रविड़ के साथ मिलकर टुगेदर, वी सोअर शिर्षित, एक बेहद प्रेरक ब्रांड कैंपेन प्रारंभ किया है। यह कैंपेन, परस्पर संबंध और एकता की ताकत पर प्रकाश डालते हुए, श्रीराम फाइनेंस की भारत की उम्मीदों के साथ साझेदारी की प्रतिबद्धता दर्शाता है। इस कैंपेन का उद्देश्य इस भावना का जश्न मनाना और राहुल द्रविड़ के अपने जीवन के एक अंश के साथ साझेदारी को आगे बढ़ने के साधन के रूप में दर्शाना है।

श्रीराम फाइनेंस में मार्केटिंग की एग्ज़ेक्युटिव डायरेक्टर एलिज़ाबेथ वेंकटरमन ने कहा कि कैंपेन में क्रिकेट के दिग्गज राहुल द्रविड़ ब्रांड एंबेसडर के रूप में शामिल हैं, जो टीमवर्क और दृढ़ता के मूल्यों को दर्शाते हैं, जिसका श्रीराम फाइनेंस भी समर्थन करता है। उनकी उपस्थिति, विकास को प्रेरित करने वाली साझेदारियों को बढ़ावा देने के लिए ब्रांड की प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है। अभियान में तेलुगू संस्करण के लिए अकादमी पुरस्कार विजेता के. एस. चंद्रबोस द्वारा बोल लिखे गए है और तमिल संस्करण के लिए प्रशंसित गीतकार मधन कर्की द्वारा बोल लिखे गए हैं, जिससे विभिन्न क्षेत्रों के दर्शकों के साथ जुड़ना संभव होगा।

एचडीएफसी बैंक ने प्रगति बचत खाता शुरू किया

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के अग्रणी निजी क्षेत्र के बैंक एचडीएफसी बैंक ने अपने प्रगति बचत खाते के लॉन्च की घोषणा की, जिसे विशेष रूप से भारत भर में ग्रामीण और अर्ध-शहरी लोगों की बैंकिंग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। एचडीएफसी बैंक के कंट्री हेड - भुगतान, देयता उत्पाद, उपभोक्ता वित्त और विपणन पराग राव ने कहा कि एचडीएफसी वित्तीय समावेशन और कृषि सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध है। हमारे प्रगति बचत खाते के माध्यम से, हम कई उद्योग-प्रथमों को पेश कर रहे हैं, जैसे कि बिगहाट के साथ हमारी साझेदारी किसानों और ग्रामीण समुदायों को उत्पादकता में सुधार, ऋण तक पहुंच और बेहतर वित्तीय परिणाम प्राप्त करने के लिए उपकरणों और संसाधनों के साथ सशक्त बनाने के लिए। हमारा लक्ष्य एक समावेशी और टिकाऊ पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देना है जो ग्रामीण विकास का समर्थन करता है और स्थानीय समुदायों का उत्थान करता है। अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी 51 प्रतिशत शाखाओं के साथ, एचडीएफसी बैंक ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं का समर्थन करना और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना जारी रखता है।

आईआईएम त्रिची में डॉ. धींग का व्याख्यान

अंतरराष्ट्रीय प्राकृत केन्द्र के पूर्व निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग ने कहा कि तिरुकुरल मानवीय चिंतन की शुद्ध और विराट अभिव्यक्ति है। इसमें तिरुवल्लुवर ने वास्तविक भारत को अभिव्यक्त किया है। भारतीय प्रबंधन संस्थान, तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु (आईआईएम, त्रिची) में निदेशक डॉ. पवनकुमार सिंह द्वारा तमिल विद्वान सोमा वीरप्पन की तिरुक्कुरल पर आधारित पहली हिन्दी पुस्तक 'यस बॉस' की पहली प्रति ग्रहण करने के उपरांत डॉ. धींग ने कहा कि तिरुक्कुरल में सभी प्रकार के श्रेष्ठ जीवन मूल्यों का समावेश है। इसमें पहली सदी के जैन कवि तिरुवल्लुवर अहिंसक जीवन, समतामय समाज और समर्थ राष्ट्र का संदेश देते है। तिरुवल्लुवर के आराध्य भगवान आदिनाथ को वंदन करके अपने मुख्य वक्तव्य में डॉ. धींग ने कहा कि तिरुकुरल सूक्तियों का भंडार है। कुरल की सूक्तियां सबके लिए प्रेरक हैं। लेखक वीरप्पन ने कहा कि तिरुकुरल में जो राजा और मंत्रियों के लिए लिखा गया, वह वर्तमान में अधिकारियों और कर्मचारियों पर लागू होता है। उन्होंने तमिल परंपरा के अनुसार डॉ. धींग का अभिनंदन किया। अनुवादक रोहित शर्मा ने धन्यवाद दिया। संचालन प्रियांशु भट्ट ने किया। **- सीए अनिल खीचा**

स्टेट जिमनास्टिक चैम्पियनशिप सम्पन्न

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान राज्य जिमनास्टिक संघ के तत्वावधान में, नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ में स्टेट जिमनास्टिक चैम्पियनशिप सम्पन्न हुई। उदयपुर जिला जिमनास्टिक संघ के अध्यक्ष हिम्मतसिंह चौहान ने बताया कि समारोह के मुख्य अतिथि नारायण सेवा के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल थे। नितुल

चंडालिया, अतुल चंडालिया, अंतर्राष्ट्रीय तैराकी कोच दिलीपसिंह चौहान, राजेन्द्र नलवाया, राजस्थान राज्य जिमनास्टिक अध्यक्ष चैनसिंह राठौड़, परमेश्वर कुमार एवं कानसिंह राठौड़ विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रतियोगिता में महिला वर्ग में जोधपुर प्रथम, नागौर द्वितीय व अजमेर तृतीय रहीं। पुरुष वर्ग में जोधपुर प्रथम, भीलवाड़ा द्वितीय और उदयपुर तृतीय रहीं। सचिव भरतसिंह भाटी ने बताया कि व्यक्तिगत स्पर्धा में दिशा- प्रथम, ईशा- द्वितीय एवं दीपा- तृतीय रहीं। पुरुष वर्ग में शुभम- प्रथम, प्रतीक- द्वितीय और उदयपुर के कृष्ण- तृतीय रहे। विजेताओं को अतिथियों ने सम्मानित किया।

चंद्रेश छतलानी का सातवाँ रिकॉर्ड

उदयपुर (ह. सं.)। ओरिएण्ट बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ के डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी ने एक साल में स्कूल विद्यार्थियों के लिए सबसे ज्यादा शैक्षणिक गेम्स सॉफ्टवेयर बनाने के रिकॉर्ड को मान्यता दी है। डॉ. छतलानी ने विभिन्न विषयों में छात्रों के लिए शैक्षिक अनुभव को बढ़ाने के लिए सॉफ्टवेयर डिज़ाइन किये हैं। यह कार्य डिजिटल शिक्षा को आगे बढ़ाने और अभिनव शिक्षण समाधानों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण था। वे तीन संस्थाओं श्रीलंका के अंतरराष्ट्रीय संगठन वर्ल्ड बुक रिकॉर्ड, ट्रिब्यून इंटरनेशनल वर्ल्ड रिकाड्र्स तथा वर्ल्डस ग्रेटेस्ट रिकॉर्ड से अधिकतम शैक्षणिक प्रमाण पत्र अर्जित करने के रिकॉर्ड धारक भी हैं। छतलानी ने एक व्यक्ति द्वारा लिखित अधिकतम अंग्रेजी लघुकथाओं की पुस्तक तथा मूलत: अंग्रेज़ी में लिखी भारतीय विधा लघुकथा की प्रथम पुस्तक के रिकॉर्ड को भी अपने नाम किया हुआ है। यह उनका सातवाँ रिकॉर्ड है। डॉ. चंद्रेश ने 13 पुस्तकें लिखी हैं, 10 पुस्तकों का संपादन किया है। छतलानी ने इस रिकॉर्ड को भी अपने स्वर्गीय पिता को समर्पित किया।

डॉ. लुहाड़िया को फैलोशिप अवार्ड

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजलि मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के टी.बी एंड चेस्ट रोग विशेषज्ञ डॉ.अतुल लुहाड़िया को कोयंबटूर में आयोजित देश की सबसे बड़ी राष्ट्रीय चेस्ट सम्मेलन नैपकोन में नेशनल कॉलेज ऑफ़ चेस्ट फिजिशियंस (एन.सी.सी.पी.) के फेलोशिप अवार्ड से सम्मानित किया गया। एन.सी.सी.पी. जो कि देश की सबसे पुरानी चेस्ट सोसायटी है, ने टी.बी एवं चेस्ट क्षेत्र में विशेष कार्य करने पर पूरे देश के विभिन्न राज्यों से चार चेस्ट फिजिशियंस को फेलोशिप अवार्ड के लिए चुना एवं सम्मानित किया। यह अवार्ड एन.सी.सी.पी. के अध्यक्ष डॉ. टी मोहन कुमार, सचिव डॉ. एस.एन.गौड़, संयुक्त सचिव डॉ. निखिल सारंगधर द्वारा प्रदान किया गया।

SAI TIRUPATI UNIVERSITY, UDAIPUR

(Approved under Section 2(f) of UGC Act 1956)

Web: www.saitirupatiuniversity.ac.in | Email: info@saitirupatiuniversity.ac.in

ADMISSION OPEN 2024-25

PIMS PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

• M.B.B.S. • MD/MS • M.Sc. in Medical Sciences | Contact : 95878 90081, 95878 90096

PIMS VENKTESHWAR INSTITUTE OF PARAMEDICAL SCIENCES
9257016003, 9587890142

• Diploma (Approved by RPMC)
- Radiation Technology
- Operation Theater Technology
- Medical Laboratory Technology
- ECG Technology
- Cath Lab Technology.
- Dialysis Technology,Blood Bank Technology,
- Endoscopy Technology,
- EEG Technology, Ophthalmic
- Technology

• B.Sc.
Medical Lab Technology, Ophthalmic Technology, Radio Imaging Technology

PIMS VENKATESHWAR INSTITUTE OF PHARMACY
(Approved by PCI) 9257016004, 9587890082

• D. Pharm • B. Pharm

PIMS VENKTESHWAR COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY
9257016002, 958789082

• B.P.T. • M.P.T.

PIMS RESEARCH PROGRAM
9587890082, 9358883194

- Ph.D. (Nursing)
- Ph.D. (Anatomy)
- Ph.D. (Bio-Chemistry)
- Ph.D. (Microbiology)
- Ph.D. (Pharmacology)
- Ph.D. (Physiology)
- Ph.D (Management)
- Ph.D (Physiotherapy)

PIMS VENKTESHWAR SCHOOL/COLLEGE OF NURSING
9587890082, 9257016001

• G.N.M. • B.Sc. (Nursing)

• M.Sc. Nursing
Child Health, Mental Health, Community Health, Midwifery and Obstetrical, Medical Surgical

PIMS VENKTESHWAR INSTITUTE OF FASHION TECHNOLOGY
9672978017, 9587890063

• Fashion Design • Journalism & Mass Communication • Interior Design
(Graduation/ Post Graduation/ Diploma/ Advance Diploma)

PIMS VENKTESHWAR INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES
9672978017, 9672978038

• BBA (International Business)
• MBA (Hospital Administration & Health Care Management)

PIMS INSTITUTE OF COMPUTER SCIENCES
9672978017, 9587890063

• Bachelor of Computer Application (B.C. A)

PIMS PACIFIC DENTAL COLLEGE & HOSPITAL
(Recognised by DCI) 9116132834

• B.D.S • M.D.S

ADMISSION HELPLINE : 9587890082, 9358883194

PIMS HOSPITAL, UMARDA, UDAIPUR

NABH ACCREDITED

Emergency : 0294-3510000

EMAIL : INFO@PACIFICMEDICALSCIENCES.AC.IN |
WEB : WWW.PACIFICMEDICALSCIENCES.AC.IN |
UMARDA RAILWAY STATION ROAD, UDAIPUR (RAJ.)

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत, प्रबंध संपादक : अर्थांक भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल-9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।